Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 28

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

13 जुलाई 2017 ई

18 शव्वाल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा उन लोगों की शरण बन जाता है जो उसके साथ हो जाते हैं। अतः ख़ुदा की ओर आ जाओ और उसका विरोध करना त्याग दो। उसके कर्तव्यों में आलस्य से काम न लो,

और उसके बन्दों पर अपनी वाणी या अपने हाथ से अत्याचार मत करो और आसमानी प्रकोप और क्रोध से डरते रहो कि मुक्ति का मार्ग यही है ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हे सरदारो, राजाओ और धनवानों ! तुम में ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो ख़ुदा से डरते और उसके समस्त मार्गों में सच्चे हैं । बहुतायत ऐसे लोगों की है जो संसार के देशों और सम्पत्तियों से हृदय लगाते हैं और फिर उसी में जीवन व्यतीत कर लेते हैं और मृत्यु को स्मरण नहीं करते। प्रत्येक सरदार जो उपासना नहीं करता और ख़ुदा से लापरवाह है उसके अधीन समस्त नौकरों का पाप उसकी गर्दन पर है। प्रत्येक अधिकारी जो मदिरापान करता है, उसकी गर्दन पर उन लोगों का भी पाप है जो उसके अधीन होकर मदिरापान में सम्मिलित हैं। हे बुद्धिजीवियो ! यह संसार सदैव रहने का स्थान नहीं । तुम संभल जाओ । तुम प्रत्येक असंतुलन को त्याग दो । प्रत्येक नशीली वस्तु का परित्याग करो। मनुष्य को तबाह करने वाली वस्तु केवल मदिरा ही नहीं अपितु अफ़ीम, गांजा, चरस, भॉग, ताड़ी और प्रत्येक नशा जो सदा के लिए आदत ही बना लिया जाता है, वह मस्तिष्क को ख़राब करता और अंततः विनाश कर देता है । अतः तुम इस से बचो। हम नहीं समझ सकते कि तुम क्यों इन वस्तुओं का प्रयोग करते हो, जिसके परिणाम स्वरूप प्रति वर्ष सहस्त्रों तुम्हारे जैसे नशे के व्यसनी इस संसार से कूच1 कर जाते हैं, और प्रलय के दिन का प्रकोप इसके अतिरिक्त है। बुराइयों से बचने वाले इन्सान बन जाओ ताकि तुम्हारी आयु बढ़ जाए और तुम ख़ुदा से वरदान पाओ। सीमा से अधिक भोग-विलास में पड़ना लानती जीवन है। सीमा से अधिक दुराचारी और निरर्थक होना लानती जीवन है, हद से अधिक ख़ुदा या उसके भक्तों की हमदर्दी से लापरवाह होना लानती जीवन है।

प्रत्येक अमीर से ख़ुदा के अधिकारों और मनुष्य के अधिकारों के विषय में ऐसे ही पूछा जाएगा जैसे एक फ़कीर से बल्कि उससे भी अधिक। अतः कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इस अल्पकालिक जीवन पर निर्भर रहकर ख़ुदा को पूर्णातया तिलांजलि दे देता है और ख़ुदा की अवैध वस्तुओं का इतनी बेशर्मी से उपभोग करता है जैसे वह अवैध उसके लिए वैध है। क्रोध की दशा में दीवानों की भांति किसी को गाली, किसी को ज़ख़्मी तो किसी को क़त्ल करने के लिए तैयार हो जाता है और कामुक आवेग में बेशर्मी के मार्गों को चरम सीमा तक पहुंचा देता है। अतः वह सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त नहीं कर सकेगा, यहां तक कि मृत्यु आ जाएगी। हे मित्रो तुम अल्प समय के लिए इस संसार में आए हो और उसमें से भी बहुत सा समय व्यतीत हो गया । अतः अपने ख़ुदा को रुष्ट मत करो। एक इन्सानी सरकार जो तुम से प्रबल हो यदि वह तुम से नाराज़ हो तो वह तुम्हें नष्ट कर सकती है। अतः तुम विचार कर लो, ख़ुदा की नाराज़गी से तुम कैसे बच सकते हो।

यदि तुम ख़ुदा की दृष्टि में संयमी हो जाओ तो तुम्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, वह स्वयं तुम्हारी रक्षा करेगा और वह शत्रु जो तुम्हारे प्राणों के पीछे पड़ा हुआ है तुम पर काबू नहीं पा सकेगा, अन्यथा तुम्हारे प्राणों का कोई रक्षक नहीं ! तुम शत्रुओं से भयभीत होकर या अन्य आपदाओं से ग्रसित होकर बेचैनी से जीवन व्यतीत करोगे और तुम्हारी आयु के अन्तिम दिन बड़े शोक और क्रोध के साथ व्यतीत होंगे। ख़ुदा उन लोगों की शरण बन जाता है जो उसके साथ हो जाते हैं। अतः ख़ुदा की ओर आ जाओ और उसका विरोध करना त्याग दो। उसके कर्तव्यों में आलस्य से काम न लो, उसके भक्तों पर अपनी वाणी या अपने हाथ से अत्याचार मत करो और आसमानी प्रकोप और क्रोध से डरते रहो कि मुक्ति का मार्ग यही है ।

हे इस्लाम के विद्वानो ! मूझे झूठा कहने में जल्दी न करो कि बहुत से रहस्य ऐसे होते हैं कि मनुष्य जल्दी से समझ नहीं सकता । बात को सुनकर उसी समय उस का खण्डन करने के लिए तैयार मत हो जाओ कि यह संयम का मार्ग नहीं है। यदि तुम में कुछ दोष न होते और यदि तुमने कुछ हदीसों के उल्टे अर्थ न किए होते तो मसीह मौऊद जो न्याय करने वाला है का आना ही व्यर्थ था। तुम से पूर्व यह नसीहत प्राप्त करने का स्थान मौजूद है कि जिस बात पर तुमने बल दिया है और जिस स्थान पर तुमने क़दम रखा है उसी स्थान पर यहूदियों ने रखा था अर्थात जैसा कि तुम हज़रत ईसा के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे हो, वे भी इल्यास नबी के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और कहते थे कि मसीह तब आएगा जब कि पहले इल्यास नबी जो आकाश पर उठाया गया दोबारा दुनियां में आ जाएगा। जो व्यक्ति इल्यास के दोबारा आने से पूर्व मसीह होने का दावा करे वह झूठा है। और वे न केवल हदीसों के अनुसार ऐसी विचारधारा रखते थे अपितु परमेश्वर की पुस्तक को जो कि मलाकी नबी की पुस्तक है। इसके प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करते थे। परन्तु जब हज़रत ईसा ने अपने बारे में यहूदियों के मसीह मौऊद होने का दावा कर दिया और इल्यास आकाश से न उतरा जो उस दावे की शर्त थी तो इन यहूदियों की समस्त आस्थाएं मिथ्या सिद्ध हो गईं और जो यहूदियों की विचारधारा थी कि एलिया नबी इस भौतिक शरीर के साथ आकाश से उतरेगा अंततः उसका अभिप्राय यह निकला कि इल्यास की आदत और स्वभाव पर कोई अन्य व्यक्ति प्रकट हो जाएगा। इस अभिप्राय का उल्लेख स्वयं हज़रत ईसा ने किया, जिनको दोबारा आकाश से उतार रहे हो । अतः तुम क्यों ऐसे स्थान पर ठोकर खाते हो जिस स्थान पर तुम से पूर्व यहूदी ठोकर खा चुके हैं। तुम्हारे देश में सहस्त्रों यहूदी मौजूद हैं तुम उनसे पूछ कर देखो कि क्या यहूदियों की यही आस्था नहीं, जो इस

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ज़िक्रे इलाही

तकरीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई (भाग-3)

और फिर जब हम यह भी साबित कर देंगे कि दुआ के अलावा कुछ अन्य तरीकों से भी ज़िक्ररुल्लाह का भी ख़ुदा तआला ने आदेश दिया है चाहे उनकी हिक्मत किसी की समझ में आए या न आए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया है तो ज़रूरी है कि आध्यात्मिकता की पूर्णता पाने के लिए इन तरीकों पर भी अमल किया जाए है। हमारी जमाअत में नफलों की अदायगी करने की ओर पूरा ध्यान न होने की यह भी वजह है कि इन लोगों ने ज़िक्ररुल्लाह के इस ज़िक्र के तरीके को लाभ दायक समझा नहीं। वे फर्ज़ों को अदा करके समझ लेते हैं कि हम ने काम पूरा कर लिया। हालांकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं और ख़ुद नहीं फरमाते बल्कि यह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे कहा है कि

لَا يَزَالُ عَبْدِیْ يَتَقَرَّبُ اِلَیَّ بِالنَّوَافِلِ فَكُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِیْ يَسْمَعُ بِهٖ وَبَصَرَهُ الَّذِیْ يُبْصِرُ بِهٖ وَيَدَهُ الَّتِیْ يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِیْ يَمْشِیْ بِهَا

(बुखारी किताबुल रिकाक) अल्लाह तआला तआला फरमाता है कि नफलों के द्वारा मेरा बंदा मुझ से इतना करीब हो जाता है कि मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से कि वह सुनता है। और मैं उसकी आँखें हो जाता हूं जिस से कि वह देखता हे। और में उसके हाथ जाता हूं जिस से कि वह पकड़ता और मैं उसके पांव हो जाता हूं जिस से कि वह चलता है।

इससे आप लोग समझ सकते हैं कि अल्लाह तआला नफलों का कितना बड़ा दर्ज़ा रखा है और नफल पढ़ने वाले के लिए कितना बड़ा स्थान करार दिया है। मानो उनके द्वारा अल्लाह तआला मनुष्य को इस सीमा तक पहुंचा देता है कि इंसान अल्लाह तआला के गुण अपने अंदर ले लेता हे। अत: नफल कोई मामूली बात नहीं है। मगर अफसोस कि कई लोग उनकी ओर ध्यान नहीं करते। मूल बात यह है कि इंसान में कमज़ोरी और सुस्ती है इसलिए वह कम से कम इबादत को अमल में लाना चाहता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला जो अपने बन्दों की कमजोरियों से परिचित और उन पर बहुत बड़ा दयालु है उसने कुछ तो फर्ज़ निर्धारित कर दिए हैं और कुछ नफल। फर्ज़ तो इसलिए कि अगर कोई व्यक्ति उन्हें पूरा कर लेगा तो उस पर कोई आरोप नहीं आएगा। अत: हदीस में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक व्यक्ति आया और उसने आकर इस्लाम के बारे में पूछा आपने फ़रमाया:

خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِی الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ فَقَالَ هَلْ عَلَیَّ غَيْرُهَا قَالَ لَا اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِيَامُ رَمَضَانَ قَالَ هَلْ عَلَیَّ غَيْرُهٗ قَالَ لَا اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ قَالَ وَذَكَرَ لَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الزَّكٰوةَ قَالَ هَلْ عَلَیَّ غَيْرُهَا قَالَ لَا اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ قَالَ فَاَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُوْلُ وَاللّٰهِ لَا اَزِيْدُ عَلٰی هٰذَا وَلَا اَنْقُصُ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْلَحَ اِنْ صَدَقَ

(बुखारी किताबुल ईमान)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे कहा कि दिन रात में पाँच नमाज़ें हैं। उसने कहा क्या उनके अतिरिक्त और भी हैं। रसूल करीम ने फरमाया नहीं । लेकिन यदि नफिल के रूप में पढ़े। फिर रसूले करीम ने फरमया। रमज़ान के रोज़े उस ने कहा। क्या उनके अतिरिक्त और भी हैं। रसूले करीम ने फरमाया नहीं। लेकिन यदि नफिल के रूप में पढ़े। फिर रसूले करीम ने फरमाया। रमज़ान के रोज़े। उस ने कहा क्या अतिरिक्त और भी हैं। आपने फ़रमाया नहीं। मगर जो तो नफिल के रूप में रखे। फिर आपने फ़रमाया। इस्लाम में ज़कात भी कर्तव्य है। उसने कहा क्या इसके अतिरिक्त और भी है आपने फ़रमाया नहीं। लेकिन जो तो नफिल के रूप में दे। या सुनकर वह व्यक्ति यह कहता हुआ चला गया। कि ख़ुदा की क़सम! मैं इस में अधिकता करूंगा ना कमी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह व्यक्ति सफल हो गया अगर उस ने सच कहा है।

इससे पता चलता है कि जो व्यक्ति फर्ज़ों को पूरी तरह अदा कर ले वह सफल हो जाता है मगर सावधान और दूरदृष्टि व्यक्ति केवल फर्ज़ों को अदा करने पर ही नहीं रहता बल्कि वह नफलों में भी कदम रखता है ताकि अगर फर्ज़ों के अदा होने में कोई कमी रह गई हो तो वह इस तरह पूरी हो जाए। जैसे दिन रात में पाँच नमाज़ें अदा करना अनिवार्य है। एक ऐसा व्यक्ति जो यह नमाज़ें तो अदा करता है लेकिन नफल नहीं पढ़ता, संभव है कि एक नमाज़ ऐसी अदा हुई हो जो उसकी किसी ग़लती की वजह से रद्द हो गई हो और क़यामत के दिन उसे इसका बदला अदा करना पड़ेगा। अत: हदीस में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बार मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे कि एक व्यक्ति ने आ कर नमाज़ पढ़ी आप ने इसे फरमाया फिर पढ़ो उसने फिर पढ़ी। आप ने फरमाया फिर पढ़ो उसने फिर पढ़ी तीसरी बार आपने फ़रमाया फिर पढ़ो उसने फिर पढ़ी है। जब आप ने चौथी बार उसे पढ़ने के लिए कहा तो उस ने कहा हे रसूल अल्लाह ख़ुदा की कसम इस से अधिक मुझे नमाज़ नहीं आती आप बताएँ कैसे पढ़ूँ । आप ने फरमाया तुम ने जल्दी नमाज़ पढ़ी है इसलिए स्वीकार नहीं हुई धीरे पढ़ो। (बुख़ारी)

तो कभी कभी ऐसी त्रुटि ही जाती हैं जिनकी वजह से नमाज़ स्वीकार नहीं होती परन्तु वह व्यक्ति जो फर्ज़ नमाज़ के साथ नफल भी अदा करता है की अगर कोई नमाज़ स्वीकार न हो तो नफल उसे काम दे सकेंगे और इस कमी को पूरा कर देंगे। उसका ऐसा ही उदाहरण है कि कोई व्यक्ति ऐसी परीक्षा देने के लिए जाए जिसमें पास होने के लिए केवल पचास नंबर पाने की शर्त हो और वे जाकर इतने सवाल हल कर आए। जिनके पचास ही नंबर हों और विश्वास कर ले कि मैं इस में पूरे पचास नंबर प्राप्त न सकें और वह फेल हो इसीलिए जो चालाक और बुद्धिमान हों वे भी सारे के सारे समाधान कर के आते हैं कि शायद सब के नंबर मिल मिला कर पास हो सकें। फिर यदि कोई सफर में चले और अनुमान कर ले कि मुझे इतना खर्च आवश्यक होगा और इतना ही साथ ले तो कभी कभी ऐसा भी होता है कि उसका अंदाज़ा ग़लत निकलता है और उसे सख्त परेशानी उठानी पड़ती है। इसलिए सावधान और बुद्धिमान लोग अनुमान से कुछ अधिक लेकर चलते हैं ताकि संयोग से खर्च के समय कष्ट न हो। तो नफल इत्तफाक से खर्च की तरह होते हैं और निहायत ज़रूरी हैं इसलिए उन्हें अदा करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

दूसरा कारण हमारी जमाअत के लोगों का ज़िक्रे इलाही की तरफ पूरा ध्यान न करने का है कि हज़रत मसीह मौऊद ने उन नाम के सूफ़ियों के रद्द में जो उस ज़माने में पैदा हो गए और जिन्होंने विभिन्न प्रकार बिदअतें फैला रखी हैं बहुत कुछ लिखा है। और उन्हें संबोधित करके कहा है कि तुम्हारे तोते की तरह वज़ीफे पढ़ने का कुछ परिणाम नहीं निकल सकता। तुम मुसल्लों पर बैठे क्या कर रहे हो, जबकि इस्लाम में चारों ओर से हमले हो रहे हैं तुम क्यों उठकर जवाब नहीं देते। इस तरीके से हज़रत मसीह मौऊद ने उन लोगों की निंदा की है और वास्तव में यह लोग निंदा के ही योग्य थे। लेकिन कुछ लोगों ने इस से यह ग़लती खाई है कि उन्होंने समझ लिया है कि शायद बैठकर अल्लाह तआला का ज़िक्र करना ही लग़्व कार्य है हालांकि इस तरह ज़िक्र लग़्व नहीं है बल्कि इसका तो उद्देश्य यह है कि ख़ुदा की प्रतिष्ठा और प्रशंसा हो लेकिन वे लोग चूँकि केवल घरों में बैठकर अल्लाह तआला का ज़िक्र करते थे और बाहर निकल कर जहां कि अल्लाह तआला की निंदा हो रही थी कुछ नहीं करते थे इसलिए उन्हें हज़रत मसीह मौऊद ने डांटा और फरमाया कि अगर तुम लोग वास्तव में अल्लाह तआला से प्रेम रखते हो उसकी प्रतिष्ठा और सम्मान वर्णन करते हो तो जिस तरह घरों में बैठे उसकी प्रशंसा वर्णन करते और उसकी स्तुति करते हो इसी तरह घरों से बाहर निकल कर भी करो। चूंकि उन्होंने सुस्ती और आलस्य की वजह से बाहर निकल कर नेकी का आदेश और बुराइयों से रोकना छोड़ दिया था इसलिए उन्हें डांटा गया है कि यह तो पाखंड है। क्योंकि अगर तुम्हारे मन में अल्लाह तआला से सच्चा प्यार और इश्क होता तो क्या कारण है कि जब विरोधी अल्लाह तआला पर हमला करते हैं तब तुम बाहर निकल कर उन्हें मुकाबला नहीं और क्या कारण है कि जिस तरह से तुम लोग कोनों और किनारों में ख़ुदा तआला को पवित्र बताते हो इसी तरह सार्वजनिक स्टेजों पर नहीं करते।

वर्तमान सूफ़ियों का ज़िक्रे इलाही:

फिर उन्हें डाँटने का यह भी कारण हुआ कि "हर के गीर वो इल्लते शवद" के अनुसार ज़िक्ररुल्लाह को उन सूफ़ियों और गदी नशीनों ने ऐसे रंग में इस्तेमाल किया कि बिगाड़ कर कुछ का कुछ बना दया। और इस्लाम ने जिस रंग में पेश किया था

शेष पृष्ठ 11 पर

ख़ुत्बः जुमअः

पिछले ख़ुत्बा में मैंने वर्णन किया था कि अल्लाह तआला ने रोज़ों और रमज़ान का उद्देश्य जो उल्लेख किया है वह दिल में तक्वा पैदा करना है और इस संबंध में मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए थे कि इस को प्राप्त करने के लिए क्या तरीके हैं और हमें कैसे यह धारण करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विषय को हमारे दिलों में बिठाने के लिए विभिन्न स्थानों पर इसे अधिक विस्तार से वर्णन किया है ताकि हमारे दिलों में इसका महत्त्व सुदृढ़ हो और हमारे हर कर्म और आचरण से इस की अभिव्यक्ति होने लगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात का वर्णन फरमाते हुए कि इंसान के मुत्तकी होने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि वे इबादत करने वाला हो या केवल अल्लाह तआला के अधिकार अदा कर रहा हो बल्कि आप ने यह भी उल्लेख किया कि मुत्तकी वह है जिस के आचरण भी उच्च हो और वह अपने आचरण से दूसरों पर अपनी नेकी और तक्वा का प्रभाव स्थापित करे।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से विभिन्न उपदेशों से उच्च आचरण को अपनाने का महत्त्व और इस बारे में जमाअत को प्रमुख उपदेश।

आजकल इस सुस्ती के दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने सामान प्रदान फरमाए हैं इस महीने में आचरण के सुधार की तरफ भी प्रत्येक को ध्यान देना चाहिए और अन्य कमज़ोरियों और गुनाहों से बचने की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

आचरण की प्राप्ति के लिए तौबा बहुत सहायक तथा तहरीक करने वाली चीज़ है। वास्तवकि तौबा की तीन बुनयादी शर्तों को वर्णन।

कुछ तथ्य और मआरिफ़ को देखकर ईमान लाते हैं लेकिन अक्सर लोग वे होते हैं जिनके मार्गदर्शन और शान्ति का कारण उत्तम आचरण और मुहब्बत होती हैं। असंख्य लोग आजकल भी जो अहमदियत में दाख़िल होते हैं किसी न किसी अहमदी के आचरण से प्रभावित होकर या समग्र जमाअत के आचरण से प्रभावित होकर अहमदी हो रहे होते हैं। अतः हर अहमदी को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए कि आचरण केवल उसे तक्वा में बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य है और दूसरों के सुधार का माध्यम भी हैं। इसलिए हर अहमदी को अपने आचरण पर नज़र रखनी चाहिए।

हमारे हर कर्म से साबित होना चाहिए कि हम ने इस आप की बैअत में आ कर अपने अंदर नैतिक परिवर्तन पैदा किए, पवित्र परिवर्तन पैदा किए हैं और फिर लोगों को यह बताएँ भी और यही तब्लीग़ का माध्यम है। अल्लाह तआला हमें तक्वा पर चलते हुए अपने स्वभाव में पवित्र परिवर्तन पैदा करने और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा हुस्ना को सामने रखने और हर समय उच्च आचरण की अभिव्यक्ति की तौफ़ीक़ प्रदान करे और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ही अपना जीवन बिताने वाले हों।

आदरणीय लुतफुर्रहमान महमूद साहिब अमेरिका पुत्र आदरणीय मियां अता उर्रहमान साह्ब और आदरणीय मिर्ज़ा उमर अहमद साहिब(रब्वा) पुत्र साहिबज़ादा डाक्टर मुनव्वर अहमद साहिब की वफात मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 9 जून 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

पिछले ख़ुत्बा में मैंने वर्णन किया था कि अल्लाह तआला ने रोज़ों और रमज़ान का उद्देश्य जो उल्लेख किया है वह दिल में तक्वा पैदा करना है और इस संबंध में मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए थे कि इस को प्राप्त करने के लिए क्या तरीके हैं और हमें कैसे यह धारण करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विषय को हमारे दिलों में बिठाने के लिए विभिन्न स्थानों पर इसे अधिक विस्तार से वर्णन किया है ताकि हमारे दिलों में इसका महत्त्व सुदृढ़ हो और हमारे हर कर्म और आचरण से इस की अभिव्यक्ति होने लगे क्योंकि अगर तक्वा नहीं तो किसी भी प्रकार की भलाई जो अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए हो नहीं हो सकती। प्रत्येक इंसान अस्थायी और क्षणिक नेकियाँ किसी क्षणिक जोश और कारण से कर लेता है लेकिन इसमें नियमितता तभी आती है जब वास्तविक तक्वा हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात का वर्णन फरमाते हुए कि इंसान के मुत्तकी होने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि वे इबादत करने वाला हो या केवल अल्लाह तआला के अधिकार अदा कर रहा हो बल्कि आप ने यह भी उल्लेख किया कि मुत्तकी वह है जिस के आचरण भी उच्च हो और वह अपने आचरण से दूसरों पर अपनी नेकी और तक्वा का प्रभाव स्थापित करे।

इसलिए आप ने एक अवसर पर फरमाया कि "आचरण मनुष्य के सालेह (नेक) होने की निशानी है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 128 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर इस बात का वर्णन फरमाते हुए कि एक मोमिन के जीवन का उद्देश्य यह होना चाहिए कि इस्लाम की शिक्षा का सौंदर्य हमेशा प्रकट किया जाए और यह इस अवस्था में संभव है जब तक्वा पर चलते हुए उच्च आचरण का प्रदर्शन किया जाए। आप फरमाते हैं कि

"तक्वा के बहुत से घटक हैं। अहंकार, खुद पसन्दी, माले हराम से परहेज़ और आचरण से बचना भी तक्वा है। जो व्यक्ति अच्छे आचरण व्यक्त करता है उसके दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं। अल्लाह तआला फरमाता है اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ (अल्मौमेनून 97) (फरमाया एक तो यह कि बुराइयों से बचना यह तक़वा है। अच्छे आचरण व्यक्त करना यह तक़वा है जिस से दुश्मन भी दोस्त हो जाता है।) आप फरमाते हैं "अब विचार करो कि यह हिदायत क्या शिक्षा देती है? इस हिदायत में अल्लाह तआला की यह इच्छा है कि अगर विरोधी गाली दे तो उसका जवाब गाली से न दिया जाए बल्कि धैर्य किया जाए। इसका नतीजा यह होगा कि विरोधी आपकी नेकी से आश्वस्त होकर ख़ुद ही लज्जित और

शर्मिंदा हो जाएगा और यह सज़ा उस सज़ा से बहुत बढ़कर होगी जो बदले के रूप में तुम इसे दे सकते हो।" फरमाते हैं "यूं तो एक ज़रा सा आदमी हत्या तक नौबत पहुंचा सकता है लेकिन मानवता की मांग और तक्वा का उद्देश्य यह नहीं है। अच्छा आचरण एक ऐसा तत्व है कि हानिकारक आदमी पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।" फरमाते हैं किसी ने फारसी में क्या अच्छा कहा है ।

लुतफ कुन लुतफ कि बेगाना शवद हलका बगोश"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 81 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

(कि मेहरबानी से पेश आओ तो बेगाने भी तुम्हारे मित्रों में शामिल हो जाएंगे।)

अत: यह वह सैद्धांतिक बात है जो हमेशा हमें मद्देनज़र रखनी चाहिए कि अपने हर कर्म को तक्वा के अधीन करते हुए अच्छे आचरण का प्रदर्शन हो।

फिर इस बात की अधिक व्याख्या फ़रमाते हुए कि आचरण से क्या अभिप्राय है और उनका उद्देश्य क्या है? जो अच्छे आचरण को प्रकट करने वाला हो उसका उद्देश्य क्या है? और हमारे सामने उन आचरण का नमूना क्या है? आप फरमाते हैं कि

"प्रथम आचरण जो इंसान को इंसान बनाता है आचरण से केवल नर्मी ही मतलब न ले।" (जो आचरण इंसान को इंसान बनाते हैं उनसे सिर्फ इतना मतलब नहीं है कि आप दूसरों से नरमी से पेश आओ।) फरमाया "ख़लक और ख़ुलक दो शब्द हैं जो एक दूसरे के मुकाबला में व्यवहार होते है। ख़लक ज़ाहरी पैदायश का नाम है। जैसे कान नाक यहां तक कि बाल आदि भी सबसे ख़लक में शामिल हैं और ख़ुलक भीतरी पैदायश का नाम है। ऐसा ही भीतरी शक्तियां जो मनुष्य और जानवर में अन्तर का कारण हैं वे सब ख़ुलक में शामिल हैं यहां तक कि बुद्धि चिंता आदि सभी शक्तियां ख़ुलक ही में सम्मिलित हैं।"

फरमाते हैं "ख़ुलक से इंसान अपनी मानवता को ठीक करता है। अगर मनुष्यों के कर्तव्य न हों तो मान लेना पड़ेगा" (मनुष्यों के जो फर्ज़ हैं वे अगर अदा नहीं करता हो या निर्धारित न हों तो मान लेना पड़ेगा, देखना पड़ेगा।) "कि आदमी है? या गधा है? या क्या है जब ख़ुलक में अंतर आ जाए तो शक्ल ही रहती है" "आदमी बनने के लिए तो उच्च आचरण आवश्यक हैं। और अगर आचरण अच्छा नहीं ,अगर इन में अंतर आ जाता है तो बाहरी शक्ल आदमी की रह जाती है और जो वास्तविक मानवता है वह समाप्त हो जाती है।)

आप फरमाते हैं "जैसे बुद्धि मारी जाए तो मजनून कहलाता है। केवल बाहरी शक्ल से ही व्यक्ति कहलाता है।" (कोई पागल हो इंसान ज़ाहरी स्थिति से कहलाता है लेकिन उसकी बुद्धि बिल्कुल नहीं है और जो इंसानों में अक्ल होती है इससे वह खाली हो जाता है) "अत: आचरण से अभिप्राय ख़ुदा तआला की ख़ुशी है" ("और वह प्रसन्न करने का यत्न किया है?) "जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के व्यावहारिक जीवन में सन्निहित दिखाई देता है।" (आचरण वे हैं जो अल्लाह तआला चाहता है और अल्लाह तआला क्या चाहता है वह जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में आप के प्रत्येक पहलू से हमें दिखाई देता है।) "अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करना है।" (यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। नैतिकता से अभिप्राय ख़ुदा तआला की ख़ुशी को हासिल करना है) इसलिए आवश्यक है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवन शैली के अनुसार अपने जीवन को बनाने की कोशिश करे। यह आचरण बुनियाद के रूप में हैं। अगर वह अस्थिर रहे तो उस पर इमारत नहीं बना सकते। आचरण एक ईंट पर दूसरी ईंट का रखना है। अगर एक ईंट टेड़ी हो तो सारी दीवार टेड़ी रहती है। किसी ने क्या अच्छा कहा है

खश्ते अव्वल चूं नहद मअमार कज
ता सुरैया मै रवद दीवार कज

(कि अगर वास्तुकार पहली ईंट ही टेड़ी लगा दे तो इससे बनने वाली दीवारों जो हैं वे आकाश तक फिर टेड़ी ही जाएँगी।)

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 132 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं। "इन बातों को बहुत ध्यान से सुनना चाहिए। अक्सर लोगों को मैंने देखा है और ध्यान से अध्ययन किया है कि कुछ उदारता तो करते हैं।" (बड़े उदार हैं। लोगों को देते भी हैं) "लेकिन साथ ही गुस्सा और शीघ्र क्रोध में भी आ जाते हैं।" (क्रोध में तुरंत आ जाते हैं) "कुछ उदार तो हैं लेकिन कंजूस हैं।" (बड़े उदार हैं नर्म चरित्र के हैं लेकिन कंजूस हैं।) "कुछ क्रोध और ग़ुस्सा की स्थिति में डंडे मार-मार कर घायल देते हैं परन्तु विनम्रता और विनय नाम को भी नहीं। कुछ को देखा है कि विनम्रता और विनय तो उन में बहुत अधिक है कुछ को देखा है कि विनय और विनम्रता तो उन में बहुत उन्नत स्तर का है परन्तु बहादुरी बिल्कुल नहीं है।" (या तो गुस्से में आ गए तो विनम्रता और विनय कोई नहीं। अगर विनम्रता और विनय दिखाएंगे तो जहां बहादुरी की ज़रूरत है वह आचरण उनमें समाप्त हो जाता है।)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के बारे में आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में फरमाया कि "इन्नका लअला ख़ुल्किन अज़ीम" और जीवन के हर क्षेत्र में आप ने अपने ख़ुलक (आचरण) के वे नमूने स्थापित कर दिए जो अपनी मिसाल आप हैं और जिस पर अपनी ताकत और सामर्थ्य के अनुसार चलना प्रत्येक मोमिन का कर्तव्य है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फरमाया कि एक समय है कि आप वाग्मिता से एक गिरोह छवि की तरह हैरान कर रहे हैं। (ऐसा भाषण और ऐसी वर्णन की स्पष्टता है कि बड़ा भारी गिरोह जो है वह प्रभावित हो जाता है।) "एक समय आता है कि तीर और तलवार के क्षेत्र में बढ़ कर बहादुरी दिखाते हैं। उदारता पर आते हैं तो सोने का पहाड़ देते हैं। नम्रता में अपनी शान दिखाते हैं क़त्ल के योग्य को छोड़ देते हैं। अत: रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेनज़ीर और पूर्ण नमूना है जो ख़ुदा तआला ने दिखा दिया है।" आप फरमाते हैं कि "इस का उदाहरण एक बड़े भव्य पेड़ की तरह है जिस की छाया में बैठ कर व्यक्ति उसके प्रत्येक अंश से अपनी ज़रूरतों को पूरा कर ले। उसका फल, उसका फूल, उसकी छाल उस के पत्ते बहरहाल सब कुछ उपयोगी है।"

फिर आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुलक के बारे में और अधिक फरमाते हैं कि "लड़ाई में सबसे बहादुर वह समझा जाता था जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट होता था क्योंकि आप बड़े ख़तरनाक स्थान में होते थे। सुबहान अल्लाह क्या शान है।" फरमाते हैं कि "एक समय आता है कि आपके पास इतनी भेड़-बकरियां थीं कि कैसर और किसरा के पास भी न हों आप वह सब एक मांगने वाले को बख्श दीं।" (ख़ुलक की यह अभिव्यक्ति है।) "अब अगर निकट न होता तो क्या देते।?" (फिर एक और रंग है) "अगर हुकूमत का रंग न होता तो यह कैसे साबित होता है कि आप क़त्ल योग्य काफिरों को बावजूद सामर्थ्य के क्षमा कर सकते हैं।" (शक्ति रखते हैं इसके बावजूद क्षमा कर दिया।) "जिन्होंने सहाबा और हुज़ूर अलैहिस्सलाम और मुस्लिम महिलाओं को सख्त से सख्त यातनाएं और कष्ट दिए थे जब वह सामने आए तो आपने फ़रमाया। "ला तसरीबा अलैकुम" मैंने आज तुम्हें क्षमा कर दिया। अगर ऐसा मौका न मिलता तो ऐसे उच्च आचरण हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के कैसे प्रकट होते।" आप फरमाते हैं कि "कोई ऐसा आचरण बतलाओ जो आप में न हो और फिर कहीं सम्पूर्ण रूप से पूर्ण न हो।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 134 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: यह वे पूर्ण नमूने हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया कि रसूल के आदर्श की तुम भी अपनी यथा शक्ति के अनुसरण तथा पालन करो। इस आदर्श का पालन करने के लिए कोशिश करनी होगी। एक चेष्टा करनी होगी। सिर्फ यह कह देना कि हम इस आदर्श पर कैसे चल सकते हैं? यह काफी नहीं है कि यह तो अल्लाह तआला के रसूल का वह उस्वा है जो बड़े उच्च नमूना का है। अल्लाह तआला ने फरमाया कि इस का तुम ने पालन करना है। अल्लाह तआला ने इस को अपनाने का आदेश दिया है तो उसके लिए कोशिश और मुजाहिद: की ज़रूरत है। अत: इस बारे में वर्णन फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"जब तक मनुष्य मुजाहिद: न करेगा, दुआ से काम न लेगा, वह पर्दा जो दिल पर पड़ जाता है दूर नहीं हो सकता।"(वह सख्ती और अंधेरे रोक जो दिल में पैदा हो गई है वह दूर नहीं हो सकती, जब तक मुजाहिद: न करो जब तक दुआ न करो फिर इसके साथ ही कोशिश और दुआ दोनों बातें आवश्यक हैं।) इसलिए अल्लाह तआला ने फरमाया है कि إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ(अर्रअद12)अर्थात ख़ुदा तआला हर प्रकार आपदा और आफत को जो क़ौम पर आती है दूर नहीं करता है जब तक ख़ुद क़ौम उसे दूर करने की कोशिश न करे हिम्मत न करे। बहादुरी से काम न ले तो कैसे बदलाव हो।" फरमाते हैं "यह अल्लाह तआला की एक अटल सुन्नत है जैसे फरमाया। وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا अत: हमारी जमाअत हो

या कोई हो वे चरित्र में परिवर्तन तभी कर सकते हैं जब मुजाहिद: और दुआ से काम ले अन्यथा संभव नहीं है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 137 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात का वर्णन फरमाते हुए कि मनुष्य के आचरण जितने भी गिरे हुए हों अगर सुधार करना चाहे तो सुधार हो सकता है। जैसा कि पहले भी फरमाया कि इस के लिए मुजाहिद: करना पड़ता है। आप ने इस बार दार्शिनकों से दृष्टिकोण का भी वर्णन किया है और एक उदाहरण वर्णन किया है। जैसा कि आप फरमाते हैं कि

"दार्शिनकों के आचरण के बदलने पर दो विचार हैं एक तो वे हैं जो यह मानते हैं कि इंसान आचरण के बदलने में सक्षम है और दूसरे वे हैं जो यह मानते हैं कि वह समक्ष नहीं। मूल बात यह है कि आलस्य और सुस्ती न हो और हाथ-पैर हिलाए तो परिवर्तन हो सकता है।" (सुस्ती न दिखाओ। मुजाहिद: करो तो आचरण बेहतर हो सकते हैं।) फरमाते हैं कि "मुझे इस स्थान पर एक मिथक याद आई है वह यह है कि यूनानियों के प्रसिद्ध फलासफर प्लेटो के पास एक आदमी आया और दरवाज़े पर खड़े होकर अंदर सूचना दी। प्लेटो का नियम था कि जब तक आने वाले का हुलिया और चेहरे के हाव भाव पता न कर लेता था अंदर नहीं आने देता था" (उसका हुलिया और बाहरी हालत आदि जब तक पता न कर ले अंदर नहीं आने देता था) "और वह अंदाज़ा से अनुमान कर लेता था कि वह व्यक्ति कैसा है" (जो व्यक्ति आया है वह कैसा है।? इन बातों से अनुमान लगा लेता था। कि) "किस प्रकार का है।? नौकर ने आकर उस व्यक्ति का हुलिया (सामान्य अनुसार) बताया तो प्लेटो ने कहा कि उस व्यक्ति को कह दो कि चूंकि तुम में बुरे आचरण बहुत हैं मैं मिलना नहीं चाहता।"(तुम घटिया चरित्र के मालिक हो मैं तुम्हें मिलना नहीं चाहता।) "उस आदमी ने जब प्लेटो का यह जवाब सुना तो नौकर से कहा कि तुम जाकर कह दो कि जो कुछ तुम ने कहा वह ठीक है लेकिन मैंने अपने बुरे आचरण का सुधार कर लिया है" (बुरी आदतें समाप्त कर दी हैं।) "उस पर प्लेटो ने कहा। हाँ यह हो सकता है तो उसे अंदर बुला लिया और बहुत आदर के साथ उससे मिला।" आप फरमाते हैं कि "जिन दार्शिनकों के यह विचार हैं कि आचरण का बदलना संभव नहीं वे ग़लती पर हैं। हम देखते हैं कि कुछ नौकरी पेशा लोग जो रिश्वत लेते हैं जब वे सच्ची तौबा कर लेते हैं फिर अगर उन्हें कोई सोने का पहाड़ भी दे तो उस पर नज़र नहीं करते।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 137 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप आचरण के सुधार की तरफ ध्यान दिलाते हुए एक उदाहरण देते हुए फरमाते हैं

"कि इंसान पर जैसे एक तरफ जन्म के समय कमज़ोरी आती है" (अर्थात कमजोरी पैदा होनी शुरू हो जाती है उसकी ज़ाहरी बनावट में, शरीर की ज़ाहरी बनावट में) "जिसे बुढ़ापा कहते हैं उस समय आँखें अपना काम करना छोड़ देती हैं। कान सुनते नहीं। अत: शरीर का प्रत्येक अंग अपने काम से खाली और लगभग निलंबित हो जाता है। इसी तरह से याद रखें कि बुढ़ापा दो प्रकार का होता है।" (या बुढ़ापा दो प्रकार का होता है।) "प्राकृतिक और ग़ैर प्राकृतिक। प्राकृतिक तो वह है जैसा कि ऊपर उल्लेख हुआ।" (बाहरी शरीर का बुढ़ापा है यह प्राकृतिक बुढ़ापा है और) "ग़ैर प्राकृतिक वह है कि कोई अपने लगे हुए रोगों की चिंता न करे।" (जो बीमारियां हैं उनकी चिंता न करो तो वह इंसान को कमजोर कर समय से पूर्व बूढ़ा बना देंगी। बूढ़ा कर देंगी अगर चिंता न करोगे तो जैसे शारीरिक प्रणाली में है। अगर बीमारियों का इलाज न करे तो इंसान का शरीर कमज़ोर हो जाता है। यह शारीरिक प्रणाली में दो तरह का है। एक प्राकृतिक बुढ़ापा है उम्र के साथ बुढ़ापा आता है एक गैर प्राकृतिक बुढ़ापा जो इंसान पर कुछ ऐसे कारणों से आता है कमज़ोरी आती है जो असावधानी के कारण होता है।) फरमाया कि "ऐसा ही आंतरिक और आध्यात्मिक प्रणाली में भी होता है।" (एक बाहरी प्रणाली में जिस में ये दो प्रकार के बुढ़ापे हैं इसी तरह आंतरिक और आध्यात्मिक प्रणाली जो है उसमें भी दो तरह के बुढ़ापे हैं।) "अगर कोई अपने बुरे आचरण को अच्छे आचरण और अच्छे चरित्र से बदलने की कोशिश नहीं करता" (जो बुरे और गंदे विचार है उन्हें अच्छे विचारों और अच्छी बातों से बदलने की कोशिश नहीं करता तो) "उसकी नैतिक हालत बिल्कुल गिर जाती है। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद और कुरआन की शिक्षा से यह बात स्पष्ट साबित हो चुकी है कि प्रत्येक रोग की दवा है लेकिन अगर आलस्य और सुस्ती व्यक्ति पर ग़ालिब आ जाए तो सिवाय मौत और क्या इलाज है। अगर ऐसी बेनियाज़ी से जीवन व्यतीत करे जैसा कि एक बूढ़ा करता है तो कैसे बचाव किया जा सकता है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 137 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: आजकल इस सुस्ती के दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने सामन प्रदान फरमाए हैं इस महीने में आचरण के सुधार की तरफ भी प्रत्येक को ध्यान देना चाहिए और अन्य कमज़ोरियों और गुनाहों से बचने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। अगर इस माहौल के बावजूद ध्यान न दिया तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तो व्यक्ति बुढ़ापे की अवस्था में चला जाएगा और इसमें जीवन का अंत है और फिर अल्लाह तआला के सामने बिना तक्वा के फिर आदमी हाज़िर होता है।

फिर आचरण को प्राप्त करने के लिए तौबा की तरफ ध्यान दिलाते हुए आप फरमाते हैं कि

"तौबा दरअसल आचरण के प्राप्त करने के लिए बड़ी उत्तम और सहायक बात है।" (उच्च आचरण पानी है तो वह भी तौबा से प्राप्त होते हैं। केवल तौबा यह नहीं कि गुनाहों से माफी मांग ली बल्कि अगर उच्च आचरण पर चलना है उन्हें प्राप्त करना है इसके लिए भी तौबा बड़ी आवश्यक है।) और फरमाया कि "और व्यक्ति को पूर्ण बना देती है अर्थात जो व्यक्ति अपने बुरे आचरण का परिवर्तन चाहता है इसके लिए आवश्यक है कि सच्चे दिल और पक्के इरादे के साथ तौबा करे। यह बात भी याद रखना चाहिए कि तौबा की तीन शर्तें हैं इन के अतिरिक्त सच्ची तौबा जिसे तौबतुन्नसूह कहते हैं, प्राप्त नहीं होती। इन तीनों शर्तों में से पहली शर्त जिसे अरबी भाषा में "इकला" कहते हैं। अर्थात उन बुरे विचारों को दूर कर दिया जाए जो रद्द की जाने वाले अवगुणों को तहरीक करते हैं । (जो अस्वीकार करने के योग्य चीज़ें हैं, आदतें हैं, बेहूदा विचार हैं बुराइयां हैं उन्हें दूर करने के लिए पहली आवश्यक है शर्त यह है कि उन्हें कैसे दूर करना है) फरमाया कि "मूल बात यह है कि विचारों का बढ़ा भारी प्रभाव पड़ता है।" (इस का विस्तार वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि इंसान जब किसी बात का विचार करता है तो उसका इंसान के स्वभाव पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है) "क्योंकि कर्म के क्षेत्र में आने से पहले प्रत्येक काम एक अवधारणा की स्थिति रखता है।" (किसी भी काम को करने के लिए या कोई बात या विचार जब कर्म में आता है इससे पहले वह एक विचार है एक अवधारणा होता है) "अत: तौबा के लिए पहली शर्त यह है कि उन बुरे विचारों और बुरी अवधारणाओं को छोड़ दे। जैसे अगर एक व्यक्ति किसी महिला से कोई अवैध संबंध रखता हो तो उसे तौबा करने के लिए पहले आवश्यक है कि इस शक्ल को बदसूरत करार दे और सभी बुरी आदतें अपने दिल में ध्यान लाए क्योंकि जैसा कि मैंने अभी कहा है विचारों का बहुत ज़बरदस्त प्रभाव है। और फरमाते हैं "मैंने सूफियों के तज़किरों में पढ़ा है कि उन्होंने विचार को यहां तक पहुंचाया कि इंसान को बंदर या सुअर की सूरत में देखा। अत: यह है कि जैसी कोई कल्पना करता है वैसा ही रंग चढ़ जाता है। इसलिए जो विचार बुरी आदत का कारण समझे जाते थे उन्हें ध्वस्त करे। यह पहली शर्त है। (सोच में उन्हें गंदा समझे)

"दूसरी शर्त नदम अर्थात लज्जित होना और अफसोस प्रकट करना। प्रत्येक व्यक्ति की अन्तरात्मा अपने अंदर यह शक्ति रखती है कि वह उसे हर बुराई पर चेतावनी करती है।" फरमाया "लेकिन बद बख्त व्यक्ति उसे परित्यक्त छोड़ देता है।" (अल्लाह तआला ने जो उसके अंदर एक क्षमता रखी हुई है काम नहीं लेता इससे) " अत: गुनाह और बुराई के करने पर लज्जा प्रकट करे और यह विचार करे कि यह सुख अस्थायी और कुछ दिन के हैं।" (यह दुनिया के आन्नद जो हैं बिल्कुल अस्थायी हैं कुछ दिनों के हैं।)"और फिर यह भी सोचे कि हर बार इस आनन्द और मज़ा में कमी होती जाती है यहां तक कि बुढ़ापे में आकर जबकि शक्तियां बेकार और कमज़ोर हो जाएंगी अंत में इन सब दुनिया के सुखों को छोड़ना होगा। अत: जबकि ख़ुद जीवन ही में यह सब सुख छूट जाने वाले हैं तो उनके करने से क्या प्राप्त?"

फरमाते हैं "बड़ा ही भाग्यशाली है वह व्यक्ति जो तौबा की तरफ लौटता है और जिस में प्रथम "इकला" का विचार पैदा हो अर्थात बुरे विचार और बेहूदा अवधारणाओं को ध्वस्त करे। जब यह गन्दगी और नापाकी निकल जाए तो पछताया हो और अपने किए पर लज्जित हो।

तीसरी शर्त इरादा है। अर्थात भविष्य के लिए दृढ़ इरादा करना पक्का इरादा कर ले कि फिर इन बुराइयों की तरफ नहीं लौटेगा और जब वह निरनतरता करेगा तो

ख़ुदा उसे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ प्रदान करेगा। यहां तक कि वे बुराइयां उससे बिल्कुल नष्ट होकर आचरण और प्रशंसनीय कार्य उसकी जगह ले लेंगे और यह जीत है आचरण पर।" फरमाया कि "इस पर ताकत और शक्ति देना अल्लाह तआला का काम है क्योंकि सभी शक्तियों और ताकतों का मालिक वही है। जैसे फरमाया اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا सारी शक्तियां अल्लाह तआला ही के लिए हैं और आदमी कमजोर है। خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا इस की वास्तविकता है। अत: ख़ुदा तआला से सहायता पाने के लिए ऊपर लिखित प्रत्येक तीनों शर्तों को (ये तीनों शर्तें जो हैं।)" पूर्ण कर के मनुष्य आलस्य और सुस्ती को छोड़ दे और चौकस होकर मेहनत कर के ख़ुदा तआला से दुआ मांगे। अल्लाह तआला आचरण बदल देगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 138-140 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर उन बुरे आचरण को छोड़ने के लिए जो प्रयास करना है और जो छोड़ता है उसकी एक बहादुर से उदाहरण देते हुए आप फरमाते हैं कि "हमारी जमाअत में दबंग और पहलवानों की शक्ति रखने वालों की आवश्यकता नहीं।" (कोई पहलवान हमें नहीं चाहिए) "बल्कि ऐसी ताकत रखने वाले अभिप्राय हैं"(ऐसी ताकत रखने वाले लोग चाहिए) "जो आचरण में परिवर्तन के लिए कोशिश करने वाले हों। यह एक सच्ची बात है कि वह दबंग और शक्ति वाला नहीं जो पहाड़ को अपनी जगह से हटा सके।" (शक्तिशाली वह नहीं है जो किसी पहाड़ को अपनी जगह से हटा दे।) फरमाया कि "असली बहादुर वह है जो आचरण को बदलने पर सामर्थ्य पाए। अत: याद रखना कि सारी हिम्मत और ताकत आचरण को बदलने में खर्च करो क्योंकि यही वास्तविक शक्ति और साहस है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 140 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं कि

"नैतिक हालत एक ऐसी करामत है जिस पर कोई उंगली नहीं रख सकता और यही कारण है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे बड़ा और शक्तिशाली चमत्कार आचरण का ही दिया गया है। जैसे फरमाया। اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ(अल्कलम 5) यूं तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हर प्रकार के चमत्कारों के सबूत में समस्त नबी अलैहिस्सलाम के चमत्कारों से अपने आप बढ़े हुए हैं लेकिन आप के आचरण के चमत्कार का नंबर उन में सबसे प्रथम है जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास नहीं मिल सकती और न प्रदान कर सकेगी।"

आप फरमाते हैं। "मैं समझता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपने बुरे आचरण को छोड़कर बुरी आदतों को परित्यक्त करे अच्छे आचरण को अपना लेता है।" (बुराईयां छोड़कर नेकियाँ धारण करता है) "उसके लिए वही चमत्कार है। जैसे अगर बहुत ही सख्त क्रोध स्वभाव वाला और ग़ुस्सा वाला इन बुरी आदतों को छोड़ता और नम्रता और क्षमा को अपनाता है या कंजूसी को छोड़ कर उदारता और ईर्ष्या के बजाय सहानुभूति हासिल करता है तो बेशक यह करामत है। और ऐसा ही अहंकार और गर्व को छोड़कर जब विनम्रता और विनय को अपनाता है तो यह विनय ही करामत है। अत: तुम में से कौन है जो नहीं चाहता है कि करामत वाला बन जाए। मैं जानता हूँ प्रत्येक यही चाहता है। अत: बस यह एक निरन्तर और जीवित करामत है। इंसान आचरण को ठीक करे क्योंकि यह एक ऐसी करामत है जिसका असर कभी नष्ट नहीं होता बल्कि लाभ दूर तक पहुँचता है।" फरमाया कि "मोमिन को चाहिए कि सृष्टि और निर्माता के निकट करामत वाला हो जाए।" (अल्लाह तआला की सृष्टि के निकट भी और अल्लाह तआला के निकट भी अपने अंदर पवित्र परिवर्तन पैदा कर के, अहंकार को छोड़ कर, विनम्रता धारण करके, उदारता की आदत पैदा कर के, ईर्ष्या की आदत छोड़ कर सहानुभूति की आदत पैदा कर के एक करामत वाला हो। यह गुण धारण करे और बुराईयां छोड़े तो यह अल्लाह तआला की सृष्टि के निकट भी और अल्लाह तआला के निकट भी चमत्कार है।) फरमाया कि "बहुत से शराबी और अय्याश ऐसे देखे गए हैं जो किसी आदत से हट कर निशान को मानते नहीं लेकिन आचरण की हालत को देखकर उन्होंने भी सिर झुका लिया और सिवाय स्वीकार करने और समझाने के दूसरी राह नहीं मिली। अत: फरमाते हैं कि "कई लोगों की जीवनी में इस बात को पाओगे कि उन्होंने नैतिक करामतों को ही देखकर सच्चे धर्म को स्वीकार कर लिया है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 141-142 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अब एक मजलिस में मस्जिद में बैठे आप यह उल्लेख कर रहे थे। तो कुछ सिख फकीरों वाली पोशाक में आए। उन्हें नशा चढ़ा हुआ था। वे भी मज्लिस में आ गए। लिखने वाले लिखते हैं कि उन्होंने आकर ऐसी बकवास की कि संभव था कि जन्नती मजलिस में भंग पड़े। कुछ बेचैनी पैदा हो जाए। फरमाते हैं कि लेकिन हमारे सादिक इमाम अलैहिस्सलाम ने अपने व्यावहारिक नमूना से यह आचरण की करामत दिखाई जिसकी हिदायत फ़रमा रहे थे। जिसका असर हाज़िर लोगों पर ऐसा पड़ा कि अक्सर इनमें से चिल्ला चिल्ला कर जोश से रो पड़े और दुष्ट अंत में पुलिस के हाथ जा पड़े। और पुलिस ने आकर उन्हें पकड़ लिया और उन की फिर पिटाई की जिस से कहते हैं उन का नशा हिरन हो गया।"

(उद्धरित सम्पादक की पंक्तियां हाशिया मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 141-142 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर ईमान लाने के विभिन्न कारणों के बारे में बयान फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"दुराचारी आदमी जो नबियों के मुकाबला में थे केवल वे लोग जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुकाबला में थे उनका ईमान लाना चमत्कार पर निर्भर न था और न चमत्कार और आदत से हट कर निशान उनकी तसल्ली का कारण थे बल्कि वे लोग आँ हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के उत्तम आचरण को ही देख कर आप की सत्यता को मानने वाले हो गए थे। आचरण के चमत्कार वह काम कर सकते हैं जो सामर्थ्य वाले चमत्कार नहीं कर सकते। اَلْاِسْتِقَامَةُ فَوْقَ الْكَرَامَةِ का यही अर्थ है और अनुभव कर के देख लो कि दृढ़ता कैसे करिश्मे दिखाती है। करामत की तरफ तो कुछ ध्यान ही नहीं होता। विशेष रूप से आजकल के ज़माने में। लेकिन अगर पता लग जाए कि अमुक व्यक्ति आचरण वाला आदमी है तो उसकी ओर जितना लौटना होता है वह कोई छिपी बात नहीं।" फरमाया "अच्छे आचरण का प्रभाव उन पर भी पड़ता है जो कई प्रकार के निशान को देखकर भी संतुष्टि और आराम नहीं पा सकते।" फरमाते हैं कि "बात यह है कि कुछ आदमी ज़ाहरी चमत्कार और निशानों को देखकर" (ईमान लाते हैं) परन्तु अधिकतर तथ्य और मआरिफ़ को देखकर ईमान लाते हैं जिनके मार्गदर्शन और शान्ति का कारण उत्तम आचरण और प्यार होते हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 81-82 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आजकल भी असंख्य लोग जो अहमदियत में दाख़िल होते हैं किसी न किसी अहमदी के आचरण से प्रभावित होकर या समग्र जमाअत के आचरण से प्रभावित होकर अहमदी हो रहे होते हैं। अत: हर अहमद को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए कि आचरण केवल उसे तक्वा में बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य है और दूसरों के सुधार का माध्यम भी हैं। इसलिए हर अहमदी को अपने आचरण पर नज़र रखनी चाहिए।

ईमान का तरीका क्या है? इस का विवरण फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला से सुधार चाहना और अपनी ताकत खर्च करना यही ईमान का तरीका है।" जितनी शक्ति है अपना ज़ोर लगाना। उसे खर्च करना और अल्लाह

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

तआला से सुधार के लिए दुआ करना। ईमान प्राप्त करने का यह तरीका है। फरमाते हैं कि "हदीस में आया है कि जो विश्वास से अपना हाथ दुआ के लिए उठाता है अल्लाह तआला उसकी दुआ अस्वीकार नहीं करता है। इसलिए ख़ुदा से मांगो और विश्वास और ईमानदारी इरादे से मांगो।" फरमाते हैं कि "मेरी सलाह तो यही है कि अच्छे आचरण दिखाने के लिए ही अपनी करामत प्रकट करना है। अगर कोई कहे कि मैं करामात वाला बनना नहीं चाहता तो यह याद रखे कि शैतान उसे धोखा में डालता है। करामत से अहंकार और गर्व अभिप्राय नहीं है। करामत से लोगों को इस्लाम की सच्चाई और वास्तविकता मालूम होती है और हिदायत होती है। मैं तुम्हें फिर कहता हूँ कि अहंकार और गर्व तो नैतिक करामत में सम्मिलित ही नहीं। अत: यह शैतान की शंका है। देखो यह करोड़ों मुसलमान जो धरती के विभिन्न भागों में नज़र आते हैं क्या ये तलवार के बल से बलात से हुए हैं? नहीं। यह बिल्कुल ग़लत है यह इस्लाम का करामत वाला प्रभाव है जो उन्हें खींच लाया है।" फरमाते हैं 'करामतें विभिन्न प्रकार की होती हैं उन में से एक नैतिक करामत भी है जो हर क्षेत्र में सफल है उन्होंने जो मुसलमान हुए केवल सच्चों की ही करामत देखी और उस का प्रभाव पड़ा। उन्होंने इस्लाम को महानता की निगाह से देखा न तलवार को देखा।" फरमाते हैं कि "बड़े बड़े शोधकर्ता अंग्रेज़ो को यह बात माननी पड़ी है कि इस्लाम की सच्चाई की भावना ही ऐसी शक्तिशाली है जो अन्य जातियों को इस्लाम में आने पर मजबूर कर देती है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 138-140 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर इस बात को बयान फरमाते हुए कि आचरण भी रिज़क की तरह हैं और उनको व्यक्त करना अल्लाह तआला के दिए हुए रिज़क की तरह है और यह भी तक्वा का एक व्यावहारिक अंग और भाग भी है। आप फरमाते हैं कि

"आमतौर पर लोग रिज़क से अभिप्राय खाद्यान्न लेते हैं। यह ग़लत है।" (खाने-पीने की चीजें केवल रिज़क नहीं हैं पैसे माल रिज़क नहीं है) फरमाया कि "जो कुछ शक्तियां दी जाए वह भी रिज़क है। अध्ययन और कला आदि मआरिफ़ प्रदान होते हैं। शारीरिक रूप से आजीविका में बढ़ोतरी हो। सब रिज़क है।" सारी चीज़ें रिज़क में शामिल हैं। बन्दे के क्षमताऐं, इस के आचरण, उसका माल सब कुछ। फरमाया कि "रिज़क में हुकूमत भी शामिल है और उत्तम आचरण भी रिज़क ही में शामिल है। यहाँ अल्लाह तआला फरमाता है कि जो कुछ हम ने दिया है उस में से खर्च करते हैं अर्थात रोटी में से रोटी देते हैं। ज्ञान में से ज्ञान और आचरण में से आचरण। ज्ञान का देना तो ज़ाहिर ही है। यह याद रखो कि वही कंजूस नहीं है जो अपने माल में से किसी को कुछ नहीं देता है बल्कि वह भी कंजूस है जिसे अल्लाह तआला ने ज्ञान दिया हो और वह दूसरों को सिखाने में संकोच करे।" (कंजूस कई प्रकार के हैं प्रत्येक जो किसी भी तरह अपने पास जो उसमें कौशल हैं या माल है उसे छुपाता है वह कंजूस है।) फरमाया "केवल इस विचार से अपने ज्ञान व कला को किसी से परिचित न करना कि अगर वे सीख जाए तो हमारा अपमान हो जाएगा या आय में अंतर आ जाएगा शिर्क है। क्योंकि इस स्थिति में वह इस ज्ञान या कला को ही अपना राज़िक और ख़ुदा समझता है। इसी तरह जो अपने आचरण से काम नहीं लेता वह भी कंजूस है। आचरण का देना यही होता है कि जो उत्तम आचरण अल्लाह तआला ने केवल अपनी कृपा दे रखे हैं लोगों से उन आचरण से व्यवहार करे।" (जो आचरण अल्लाह तआला ने इंसान को दिए हैं पहले तो वे आचरण प्राप्त करे फिर उन आचरणों की अभिव्यक्ति लोगों के सामने करे यह रिज़क जो अल्लाह तआला ने दिया है, देने की अभिव्यक्ति है।) फरमाया "वे लोग उसके नमूना को देख कर ख़ुद भी आचरण बनाने की कोशिश करेंगे।" जब इंसान अपने आचरण दिखाने के नमूने स्थापित करेगा तो लोग भी फिर आचरण वाला होने की कोशिश करेंगे। फरमाते हैं कि "आचरण से इतना ही अभिप्राय नहीं है कि ज़बान नरम और शब्द में नरमी बरते। नहीं। बल्कि बहादुरी, पवित्रता, आदि जितनी शक्तियां व्यक्ति को दी गई हैं दरअसल सब नैतिक शक्तियां हैं उनका यथा समय उपयोग करना ही उन्हें नैतिक हालत में ले आता है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 138-140 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अपनी जमाअत के लोगों को उच्च नैतिकता धारण करने और अपने अंदर बदलाव पैदा करने की नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि

"जो व्यक्ति अपने पड़ोसी को अपने आचरण में बदलाव दिखाता है पहले क्या था और अब क्या है वह मानो एक चमत्कार दिखाता है। इसका असर पड़ोसी पर बहुत उच्च स्तर का पड़ता है। फरमाते हैं कि "हमारी जमाअत पर आपत्ति ऐसे करते हैं कि हम नहीं जानते कि क्या तरक्की हो गई है और आरोप लगाते हैं कि झूठ क्रोध तथा ग़ज़ब में पीड़ित हैं। क्या यह उनके लिए लज्जा का कारण नहीं है कि व्यक्ति उत्कृष्ट समझ कर इस सिलसिले में आया था जैसा कि एक नेक पुत्र अपने पिता की नेकनामी दिखाता है क्योंकि बैअत करने वाला पुत्र के आदेश में होता है। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों को मोमिनों की माएं कहा गया है। मानों कि उम्मत के मोमिनों के पिता हैं। शारीरिक पिता पृथ्वी पर लाने का कारण होता है और ज़ाहरी जीवन का कारण लेकिन आध्यात्मिक पिता आसमान पर ले जाता और इस असली केंद्र की ओर ले जाता है।" फरमाते हैं "क्या आप पसंद करते हैं कि कोई बेटा अपने पिता को बदनाम करे? (जो आरोप लगा रहे हैं कि यह है, यह है आप लोगों में बुराई है तो इसका मतलब यह है कि तुम जमाअत को बदनाम कर रहे हो और क्या कोई यह पसन्द करता है कि कोई बेटा अपने पिता को बदनाम करे) "वेश्याओं के यहां जाए? और जुआ खेलता फिरे? शराब पीए या ऐसे बुरे कार्यों का करने वाला हो जो पिता की बदनामी का कारण हों।" फरमाते हैं "मैं जानता हूँ कि कोई आदमी ऐसा नहीं हो सकता जो कि इस कार्य को पसंद करे लेकिन जब वह हतभागा बेटा ऐसा करता है तो लोगों की ज़बान बंद नहीं हो सकती। (यदि कोई करे तो दुनिया उंगलियां उठाती है।) "लोग उसके पिता की तरफ तुलना करके कहेंगे कि यह अमुक पिता का बेटा अमुक बुरे काम करता है। तब वह नाखल्फ़ बेटा ख़ुद ही पिता की बदनामी का कारण होता है। इसी तरह जब कोई व्यक्ति एक सिलसिला में शामिल होता है।" (जमाअत में जब शामिल हुए)" और इस सिलसिले की महानता और सम्मान का ख्याल नहीं रखता और उसके ख़िलाफ करता है तो वह अल्लाह तआला के नकिट पकड़ा जाएगा।" (अल्लाह तआला के निकट फिर वह पकड़ा जाएगा। सज़ा को योग्य होगा) "क्योंकि वह सिर्फ अपने आप को ही विनाश में नहीं डालता बल्कि दूसरों के लिए एक बुरा नमूना होकर उन्हें नेकी और हिदायत के मार्ग से वंचित रखता है। अत: जहां तक तक आप लोगों की शक्ति है ख़ुदा तआला से मदद मांगी और अपनी पूरी ताकत और हिम्मत से अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करो। जहां थक जाओ वहाँ सिदक और विश्वास से हाथ उठाओ क्योंकि विनम्रता और विनय से उठाए हुए हाथ जो ईमानदारी और विश्वास की तहरीक से उठते हैं खाली वापस नहीं होते। हम अपने अनुभव से फरमाते हैं कि हमारी असंख्य दुआएं स्वीकार हुई हैं और हो रही हैं।" फरमाते हैं "यह एक निश्चित बात है कि अगर कोई व्यक्ति अपने अंदर अपने अपनी जाति के लिए सहानुभूति का जोश नहीं पाता वह कंजूस है। यदि मैं एक राह देखूँ जो भलाई और अच्छाई है तो मेरा कर्तव्य है कि मैं पुकार पुकार कर लोगों को बतलाउं। इस बात की परवाह नहीं होनी चाहिए कि कोई उस पर अमल करता है या नहीं।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 146-147 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: हमारे हर कर्म से साबित होना चाहिए कि हम ने इस आप की बैअत में आ कर अपने अंदर नैतिक परिवर्तन पैदा किए, पवित्र परिवर्तन पैदा किए हैं और फिर लोगों को यह बताएँ भी और यही तब्लीग़ का माध्यम है। अल्लाह तआला हमें तक्वा पर चलते हुए अपने स्वभाव पवित्र परिवर्तन पैदा करने और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा हुस्ना को सामने रखने और हर समय उच्च आचरण की अभिव्यक्ति की तौफ़ीक़ प्रदान करे और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ही अपनी जीवन बिताने वाले हों।

नमाज़ के बाद दो जनाज़े गायब भी पढ़ाउंगा। एक आदरणीय लुतफुर्रहमान महमूद साहिब अमेरिका का है जो आदरणीय मियां अता उर्रहमान साहिब के बेटे थे। 27 मई 2017 को उनकी वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनका संबंध भैरह: से था और उनके दादा हज़रत मियां करम दीन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे जिन्होंने 1894 ई में बैअत की थी। उनकी पत्नी इन की दादी तालिए बीबी ने बैअत तो शायद अपने पति के साथ कर ली थी लेकिन पूरा शायद विश्वास नहीं था। तालिए बीबी उन का नाम था। उन्होंने एक सपना देखा था और उनके सपना सुन कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि जिस महिला को यह सपना आया है लेकिन इस महिला को मुझ पर पूर्ण विश्वास नहीं है (कोई सपना आया थी इससे यह अभिव्यक्ति था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आगमन पर, बेसत पर पूर्ण विश्वास नहीं।) फरमाया कि "अगर वह मुझ पर पूर्ण विश्वास करे तो ख़ुदा तआला लड़का प्रदान करेगा। इसलिए यह फिर कादियान बैअत के लिए गए और फिर ख़ुदा तआला ने उन्हें लड़का दिया जिसका नाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अता उर्लहमान रखा। यह लुतफुर्रहमान साबिह के पिता थे। यह बड़ा लंबा समय तालीमुल इस्लाम स्कूल में भी विज्ञान पढ़ाते थे। मैं भी स्कूल में उनके शिष्यों में शामिल था। आप मियां अता उर्रहामन साहिब साहब के बड़े बेटे थे। ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान के मुहतममीन के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ पाई। अलमीनार और खालिद के संपादक भी रहे फिर सिएरा लियोन चले गए वहाँ काफी लंबा समय सिएरा लियोन में जमाअत स्कूल मैं रहे फिर रिटायर हो कर अमेरिका चले गए थे। उन्हें भाषण और लेखन बहुत अनुभव प्राप्त था। उनके लेख अक्सर अल्फज़ल में प्रकाशित होते थे। महमूद मुजीब असग़र साहिब फरमाते हैं कि एक बार पाकिस्तान आए तो ख़िलाफत लाइब्रेरी में संदर्भ तलाश कर रहे थे पूछा तो लुतफुर-रहमान साहिब ने यह बताया कि अमेरिका में अख़बारों में इस्लाम और कुरआन पर जो आपत्तियां होती हैं उनका प्रामाणिक संदर्भ जवाब तैयार करके उन्हें भिजवाया तो आमतौर पर अख़बार वाले मेरा लेख प्रकाशित कर देते हैं। और इसी लिए मैं इस समय खिलाफत लाइब्रेरी में संदर्भ देख रहा हूँ।

अताउल मुजीब राशिद साहिब ने भी लिखा है कि बहुत व्यापक अध्ययन था धार्मिक मुद्दों पर गहरी नजर रखने वाले थे। उर्दू और अंग्रेज़ी पर समान अधिकार था। उर्दू में शोध और जानकारीपूर्ण लेख विशेष विद्वानों के तरीके से लिखते थे। ज्ञान के बिन्दु खोजने का बहुत शौक था और सिलसिले का साहित्य हमेशा अध्ययन में रहता था। बहुत इल्म दोस्त थे। शीघ्र उत्तर देने में भी पूर्णता रखते थे। खलील मुबश्शिर साहिब जो सिएरा लियोन मिशन में अमीर और मुबल्लिग़ इन्चार्ज रहे हैं वह फरमाते हैं कि बीस साल से अधिक समय हम ने एक साथ बिताया और बड़ा करीब से उन्हें देखने का मौका मिला। बड़े अद्वितीय स्थान रखने वाले इंसान थे। विनीत विनम्र। फरमाते हैं। विनम्रता की हालत ऐसी थी कि मेरे पास परिभाषित करने के लिए शब्द नहीं हैं। बड़े नि:स्वार्थ इंसान थे और यह केवल अतिशयोक्ति नहीं वास्तव में उनकी यह हालत थी। अल्लाह तआला ने उन्हें भाषण और लेखन पर भी अधिकार दिया था।

यह अहमदिया स्कूल में पहले शिक्षक थे फिर प्रिंसिपल बन गए और बड़े उत्कृष्ट रंग में सभी प्रशासनिक काम उन्होंने आयोजन किए। नमाज़ें बड़ी विनम्रता से अदा करने वाले, अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र अदा करने वाले, चन्दों में बहुत नियमित, दान करने वाले, वित्तीय तहरीकों में बढ़चढ़ कर भाग लेने वाले वुजूद थे और ख़िलाफत से भी उनका बड़ा भक्ति और प्रेम का संबंध था ।हज़रत ख़लीफुतल मसीह राबि का जो 1988 का सिएरा लियोन का दौरा था। इस में भी उन्हें बहुत अधिक सेवा भी तौफ़ीक़ मिली और हुज़ूर का सम्मान ऐसा देखने योग्य था जो दूसरों के लिए भी नमूना था। यहां भी आए हैं मेरे साथ हालांकि पुराना संबंध था लेकिन ख़िलाफत के बाद वास्तव में एक अंदाज़ उनका बदला हुआ था।

फज़ल अहमद शाहिद साहब भी मुरब्बी सिलसिला फरमाते हैं कि एक बार एक ईसाई प्रचारक बो में आकर बड़ी भीड़ इकट्ठा करके लोगों के सामने फर्जी चमत्कार पेश किए आपने इसका लिखित जवाब पेश किया जिस पर ईसाई बौखला गए और इस बात पर ग़ैर अहमदी मस्जिदों के उल्मा ने भी बहुत ख़ुशी और प्रसन्नता को प्रकट किया। अल्लाह तआला उनसे माफी और दया का व्यवहार करे। स्तर ऊंचा करे और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की ताकत प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा है प्रिय मिर्ज़ा उम्र अहमद साहिब जो साहिबज़ादा डॉक्टर मिर्जा मुनव्वर अहमद साहिब मरहूम के पुत्र थे ।उनकी 5 जून दोपहर दो बजे ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट रबवा में 67 साल की उम्र में वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। यह मेरे बचपन के साथी हमउम्र थे। हम बचपन में इकट्ठे खेलते भी थे। बड़ी शक्तियों के मालिक थे और एक प्रिय होने, रिश्तेदार होने, हमउम्र होने के बावजूद और बावजूद इसके कि बचपन से इकट्ठे पले खिलाफत के बाद तो विशेष रूप से मैंने देखा है कि इनके सम्मान जो स्थिति थी और जो आस्था थी वह वास्तव में एक आदर्श बन चुकी थी। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा फरमाए।

उनकी शादी अमतुल काफी साहिबा के साथ हुई जो मेजर सैयद सईद अहमद साहिब की बेटी थी। यह हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक साहिब की नवासी हैं। हज़रत ख़लीफुत मसीह सालिश ने उनका निकाह पढ़ाया था। उनके पांच बच्चे हैं। तीन बेटियां और दो बेटे और एक बेटी जो सब से छोटी है वाकफा नौ भी है। रिव्यू आफ रिलेजनज़ में बड़ा अच्छा काम कर रही है। एक बेटी डाक्टर फरीहा यहाँ लंदन में है यह डॉक्टर हम्माद साहिब की पत्नी हैं और लजना में विभिन्न हैसियतों में उन्होंने काफी काम किया है।

यहां उनकी बहन अमतुल हई साहिबा डॉक्टर हामिदुल्लाह ख़ान की पत्नी हैं। यह भी जमाअत की सेवा करने वाली हैं। उनकी इच्छा तो हमेशा थी कि वक्फ करें लेकिन जब मेरी ख़िलाफत की शुरुआत में मेरे पास आए कि मैंने वक्फ का पहले भी लिखा था कि वक्फ करना चाहता हूं। तो उनकी कुछ क्षमताओं का मुझे पता था इसलिए मैंने उन का वक्फ स्वीकार कर लिया और उन्हें रबवा उपाध्यक्ष उमूमी के रूप में लगाया और अल्लाह तआला की कृपा से उन्होंने बड़े उत्तम रूप में यह काम वहाँ आयोजन किया। उनकी पत्नी कहती हैं कि उन्होंने मुझे बताया कि मेरा वक्फ का पत्र जो मैंने लिखा था कि स्वीकार हो गया है और फिर मैंने जो उन्हें हिदायतें दी थीं कि कैसे वहाँ जा कर काम करना है और दूर के मुहल्लों में खासकर रबवा में जो दूर के मुहल्ले हैं उन्हें कुछ को वंचित रहने का अनुभव होता है इसलिए वहाँ ज़रूर दौरा करना है और इसलिए उन्होंने अंतिम जीवन तक इस काम को निभाया और बड़ी अच्छी तरह निभाया। और वहाँ के ग़रीब लोग भी उनसे बड़े खुश थे। उनकी तबीयत में बड़ी विनम्रता थी और मामला समढना भी बहुत था अल्लाह तआला की कृपा से बड़े उत्तम तरीकों से मामलों को निपटा दिया करते थे। सदर उमूमी साहिब ने भी लिखा है कि कई मामले जो बड़े कठिन होते थे हम उन्हें देते थे और यह बड़े उत्तम रूप में उन्हें आयोजन किया करते थे और दोनों पक्ष उनकी बात सुन के राज़ी भी हो जाते थे बल्कि कुछ फरमाते थे कि हम ने फैसला करवाना है तो उन्हीं से करवाना है क्योंकि वह प्रत्येक की बात सुन कर और बड़े न्याय से निर्णय करते हैं। उन की तबीयत में बड़ी नरमी और प्यार था बच्चों से, अपने बच्चों से भी और दूसरों के बच्चों से भी बहुत प्यार करते थे।

ख़िलाफत से उनका संबंध तो था ही बहुत ज्यादा और कहना चाहिए एक आदर्श संबंध था। यही उनके बच्चों ने भी लिखा। उनकी पत्नी ने भी लिखा और अन्य लिखने वालों ने भी लिखा क्योंकि अंतिम बीमारी के दिनों में उन्हें कैंसर की बीमारी थी तो कमज़ोरी हो जाती थी जब ज़रा बेहतर होते थे तो तुरंत कार्यालय चले जाते थे इसलिए कि यहाँ जब पिछले दिनों मैं आए हैं तो मैंने कहा था कि कार्यालय जाते रहना। तो क्योंकि यह आदेश है समय के ख़लीफा का कि कार्यालय जाते रहना इसलिए अपनी बीमारी की परवाह नहीं की और नियमित कार्यालय जाते रहे और इस समय भी बावजूद बीमारी के बड़ी मेहनत से अपने काम को अंजाम दिया। उनकी बेटी कहती हैं यहाँ जब आए हैं डॉक्टर ने देखा और कहा कि आप की बीमारी बड़ी ख़तरनाक है तो उन्होंने कहा कि ठीक है अल्लाह तआला शिफा देने वाला है जितना चाहेगा वह जीवन देगा और मुझे कोई इस पर चिंता नहीं है। तो यहाँ अंग्रेज़ डॉक्टर था वह भी हैरान रह गया कि ऐसे रोगी कई बार बड़ा घबरा जाते हैं लेकिन यह तो बड़े हौसले से बात कर रहे हैं। इसी तरह डॉक्टर नूरी साहिब भी लिखते हैं कि उन्हें तीन रोग थे। diabetes भी थी, हृदय रोग भी था, उसके बाद कैंसर की बीमारी भी थी, जिगर कैंसर था लेकिन बड़ी हिम्मत सारी बीमारियों को उन्होंने सहन किया। नूरी साहिब कहतें हैं कि उच्च आचरण के मालिक थे जो मैंने उनकी बीमारी के दिनों में देखा है। कभी कोई शिकवा ज़बान पर नहीं लाए हमेशा यही कहते थे अलहम्दो लिल्लाह ठीक हों। डॉक्टर या मेहमान उन्हें मिलने आते तो इशारे से पास बैठने के लिए कहते। कमर सुलैमान साहिब कहते हैं कि जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की वफात हुई है लंदन आ रहा था तो मुझे एक बंद लिफाफा दिया जिस पर लिखा था कि बख़िदमत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस और साथ कहा कि यह मेरा बैअत का ख़त जो भी ख़लीफा का चयन हो उनकी सेवा में पेश कर देना। एक विश्वास था कि ख़िलाफत की प्रणाली जो जारी है और सही है। सदर उमूमी साहिब भी लिखते हैं कि बहुत गुणों के मालिक थे और जो भी काम सौंपा जाता जब तक वह कर के रिपोर्ट नहीं दे देते आराम से नहीं बैठते थे। असंख्य लोगों ने पत्र लिखे हैं। इसी तरह बाकी लिखने वालों ने भी उनकी विनम्रता, विनय और प्यार से पेश आना और ख़िलाफत से एक विशेष संबंध के बारे में लिखा है। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे और उनके बच्चों को भी उन्हें उनकी नेकियों को जारी रखने और ख़िलाफत से जुड़े रहने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई (भाग -1)

हुज़ूर अनवर का लंदन से रवाना होना और सड़क मार्ग द्वारा जर्मनी में पहुंचना, जमाअत के लोगों का हुज़ूर से प्यार के नज़ारे, आमीन की तकरीब।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर,एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री,)

8 अप्रैल 2017 (शनिवार)

लंदन (यूके) से प्रस्थान और फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) में

सय्यदना हज़रत अमीरुल ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जर्मनी सफर पर रवाना होने के लिए सुबह पौने दस बजे अपने निवास से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही जमाअत के दोस्त पुरूष, महिलाएं मस्जिद फज़ल लंदन के बाहरी परिसर में जमा थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ स्नेह से कुछ देर के लिए दोस्तों के बीच रौनक अफरोज़ रहे। प्रत्येक व्यक्ति अपने प्यारे हुज़ूर के दर्शन से लाभान्वित हुआ। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बढ़ा कर सभी मौजूद लोगों को अस्सलामो अलैकुम कहा और सामूहिक दुआ करवाई। इसके बाद सात गाड़ियों पर आधारित काफिला ब्रिटेन के शहर Dover की ओर रवाना हुआ।

Dover ब्रिटेन की एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। लंदन और इसके आसपास के क्षेत्रों में बसे लोग यूरोप की सफर इसी Ferries बंदरगाह से करते हैं। Dover ग्यारह मील पहले Folkestone के क्षेत्र में वह प्रसिद्ध Channel Tunnel आता है जो समुद्र के नीचे से ब्रिटेन और फ्रांस के तटीय क्षेत्रों को आपस में जोड़ती है। इस Tunnel (सुरंग) द्वारा कारें और अन्य बड़े वाहन के ट्रेन के द्वारा फ्रांस के तटीय शहर Calais तक पहुंचती हैं। आज इसी चैनल सुरंग के द्वारा सफर का कार्यक्रम था।

लंदन से आदरणीय रफीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत अहमदिया यू.के, आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज यू.के, आदरणीय डॉक्टर एजाज़ुर्रहमान साहिब सदर मजलिस अंसारुल्लाह यू.के, आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा विक़ास अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के, आदरणीय आख़लाक़ अहमद अंजुम साहिब (दफ्तर वकालत तबशीर) आदरणीय ख़ालिब जावेद साहिब (दफ्तर निजी सचिव) आदरणीय मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब (मुख्य परीक्षक) आदरणीय नासिर इनआम साहिब (प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यूके) और आदरणीय सैयद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब उप अधिकारी सुरक्षा विशेष और ख़ुद्दाम की सुरक्षा टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए चैनल टनल तक काफिला के साथ आए थे। करीब एक घंटा पच्चीस मिनट की सफर के बाद सवा ग्यारह बजे चैनल टनल पहुंचे। लंदन से साथ आने वाले दोस्तों ने अपने प्यारे हुज़ूर को अलविदा कहा। एक विशेष प्रोटोकॉल प्रबंधन के तहत, आव्रजन कार्रवाई के बाद लगभग ग्यारह बजकर पैंतालीस मिनट पर गाड़ियां ट्रेन बोर्ड पर की गईं। चैनल सुरंग में जो ट्रेनें चलती हैं उनमें कुछ दो स्थलों में शामिल हैं और एक ट्रेन में 180 से अधिक वाहन बोर्ड की जाती हैं। ट्रेन अपने समय के अनुसार बारह बजे, 140 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से फ्रांस के तटीय शहर Calais के लिए रवाना हुई।

इस सुरंग (Channel Tunnel) की कुल लंबाई 31 मील है और इसमें से 24 मील का हिस्सा समुद्र के नीचे है। इस सुरंग सबसे गहरा भाग समुद्र तल से 75 मीटर अर्थात 250 फुट नीचे है। अभी तक पानी के नीचे बनने वाली सुरंग में यह दुनिया की सबसे बड़ी सुरंग है। लगभग 35 मिनट की सफर के बाद फ्रांस के स्थानीय समय के अनुसार एक बज कर 35 मिनट पर फ्रांस के शहर Calais पहुंचे। फ्रांस का समय ब्रिटेन से एक घंटा आगे है। ट्रेन रुकने के बाद क़रीब पांच मिनट के अंतराल से गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटर मार्ग पर सफर शुरू हुई। पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यहाँ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पेट्रोल पंप के पार्किंग क्षेत्र में जमाअत जर्मनी से आए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत करना था।

जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी, आदरणीय हैदर अली जफर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी, आदरणीय मुहम्मद इलियास मजूकह साहिब महासचिव, आदरणीय जरी उल्लाह साहिब (मुरब्बी सिलसिला) उप महासचिव, आदरणीय यहया ज़ाहिद साहिब सहायक महासचिव, आदरणीय हसनात अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी, आदरणीय डॉक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब, आदरणीय अब्दुल्लाह सुपरा साहिब और आदरणीय हम्माद अहमद साहिब मुहतमिम अमूमी ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी अपने ख़ुद्दाम की सुरक्षा टीम के साथ अपने प्यारे हुज़ूर का स्वागत करने के लिए मौजूद थे।

जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी और आदरणीय हैदर अली जफर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी और जर्मनी से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों ने अपने प्यारे हुज़ूर से हाथ मिलाया। इस के बाद यहाँ से आगे सफर शुरू हुआ। जर्मनी से आने वाली तीन कारों में से एक कार ने काफिले को Escort और बाकी ख़ुद्दाम के दो वाहन काफिले के पीछे थे। यहाँ Calais से 55 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद फ्रांस की सीमा पार करके बेल्जियम में प्रवेश हुए। प्रोग्राम के अनुसार सीमा पार करने के लिए आगे 55 किलोमीटर बाद मोटरवे पर ही एक रेस्तरां Hotel Brugge - Oostkamp में नमाज़ ज़ुहर व अस्र पढ़ने और दोपहर के भोजन का इंतजाम किया गया था। जर्मनी से ख़ुद्दाम की एक टीम इन मामलों को पूरा करने के लिए पहले से ही यहां पहुंची हुई थी। लगभग तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ यहाँ तशरीफ़ लाए। नमाज़ ज़ुहर व अस्र अदा करने का प्रबंधन होटल से अलग हॉल में किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़े ज़ुहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने और दोपहर के भोजन के बाद साढ़े चार बजे यहां से फ्रैंकफर्ट के लिए प्रस्थान किया। बेल्जियम में और 223 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद बेल्जियम के सीमा पार करके जर्मनी की सीमा में प्रवेश किया। यहाँ सीमा से दस मिनट की दूरी पर जर्मनी का शहर आखन (Aachen) आबाद है। यहां एक रेस्तरां में पार्किंग क्षेत्र में कुछ देर के लिए रुके। यहाँ से फ्रैंकफर्ट की दूरी 360 किलोमीटर है। करीब दो घंटे की सफर के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जमाअत जर्मनी के केंद्र " बैयतुस्सबूह" 'फ्रैंकफर्ट में पधारे।

जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो फ्रैंकफर्ट और उसके आसपास की जमाअतों और जर्मनी के कुछ विभिन्न शहरों से आए जमाअत के दोस्त मर्द महिलाए और बच्चों बच्चियों ने अपने प्यारे हुज़ूर का बड़ा भावुक और शानदार अंदाज़ में स्वागत किया। बच्चियां और बच्चे एक ही रंग में तैयार विभिन्न समूहों के रूप में दुआ नज़्में और स्वागत गीत पेश कर रहे थे। आस्था और प्रेम से हर तरफ से हाथ बुलंद थे और अहलन व सहलन और मरहबा के स्वर हर तरफ ऊंचे हो रहे थे। आदरणीय इदरीस अहमद साहिब स्थानीय अमीर फ्रैंकफर्ट और आदरणीय मुहम्मद अशरफ ज़िया साहिब मुरब्बी सिलसिला फ्रैंकफर्ट और आदरणीय अब्दुल समीअ साहिब विभाग संपत्ति बैयतुस्सबूह ने हुज़ूर अनवर का स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले ये दोस्त फ्रैंकफर्ट शहर के

विभिन्न क्षेत्रों के अतिरिक्त

Gross Gerau,Wiesbaden,Bad Homburg,Russelsheim,Raunheim,Hanau,Maintal,Oberurssel,Morfelden,Escborn,Friedberg

जमाअतों से आए थे। अपने आक़ा के स्वागत के लिए ये लोग बड़े लंबे सफर तय करके आए थे। कोबलनज़ (Koblenz) से आने वाले 130 कि.मी, कोलोन (Koln) से आने वाले 170 किलोमीटर और Nurnberg से आने वाले 350 किलोमीटर का सफर तय करके पहुंचे थे। इन स्वागत करने वाले पुरूषों, महिलाओं और बच्चे बच्चियों की संख्या सोलह सौ से अधिक थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दोनो तरफ खड़े अपने आशिकों के बीच से गुजरते हुए अपनी निवास स्थान पधारे। नौ बजकर पाँच मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अपने आवासीय भाग में पधारे।

हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए जर्मनी के विभिन्न जमाअतों जो दोस्त मर्द महिलाएं पहुंचीं थीं इन सभी ने अपने प्यारे हुज़ूर के अनुसरण में नमाज़ मग़रिब व इशा अदा करने का सौभाग्य पाया। उन में से एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जो इस साल पाकिस्तान से किसी माध्यम से यहां पहुंचे थे और उनके जीवन में अपने प्यारे हुज़ूर के अनुसरण में यह पहली नमाज़ थी। ये सभी दोस्तों अपनी इस ख़ुशनसीबी और सौभाग्य पर बेहद ख़ुश थे और इन मुबारक और मुबारक क्षणों से लाभान्वित हो रहे थे जो उनके जीवन में पहली बार आए थे और उन्हें अमृत दे रहे थे। अल्लाह तआला ये सोभाग्य और बरकत और यह पुरस्कार हम सब के लिए मुबारक करे, हमारी आगामी नस्लें और औलादें भी इन अल्लाह तआला के पुरस्कारों से हमेशा फ़ैज़ पाती रहें। आमीन।

☆ ☆ ☆

9 अप्रैल 2017 (रविवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बजकर 45 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने दफ्तर के मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

फैमली मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और फैमली मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज सुबह इस सत्र में 38 परिवारों के 143 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। यह फैमलियां जर्मनी की 35 विभिन्न जमाअतों से मुलाकात के लिए पहुंची थीं। उनमें से कुछ परिवार बड़े लंबे सफर तय करके अपने प्यारे हुज़ूर मिलने का सौभाग्य पाने के लिए आए थे।

Waiblingin से आने वाले 230 कि.मी, Recklinghausen से आने वाले 240 कि.मी Munster 260 और Balingen 280 कि.मी, Hannover से आने वाली परिवारों 340 कि.मी, Leipzig से आने वाले दोस्त 380 कि.मी, Oldenburg और Delmenhorst से आने वाली परिवार 430 कि.मी, जबकि Harburg से आने वाले 470 किलोमीटर और Berlin शहर से आने वाले 550 किलोमीटर का लंबा फासला तय करके अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाकात के लिए पहुंचे थे। विदेश क्रोशिया से आने वाली परिवार ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया।

आज मुलाकात करने वाली परिवारों में बड़ी संख्या उन लोगों की थी जो पाकिस्तान से यहां आए और अपने जीवन में पहली बार अपने प्यारे आक़ा से मिल रहे थे। ये सभी ख़ुशी तथा आन्नद से परिपूर्ण थे कि उनके जीवन में आज एक ऐसा दिन आया था कि जो कि कुछ क्षण उन्होंने अपने आक़ा की निकटता में व्यतीत किए। वह उनके सारी जीवन की पूंजी थे। उनमें से प्रत्येक बरकतें समेटे हुए बाहर आया। उनकी परेशानियां और पीड़ा राहत तथा शांति और दिल की संतुष्टि में बदल गईं और यह मुबारक क्षण उन्हें हमेशा के लिए सिंचित कर गए। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम एक बज कर 30 मिनट तक जारी रह इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ुहर असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने आवास पर पधारे।

फैमली मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे फैमली मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज 32 परिवारों के 137 लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर से मिलने का सौभाग्य पाया। प्रत्येक परिवार ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने से करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। आज मुलाक़ात का श्रेय पाने वाले जर्मनी की निम्नलिखित 25 जमाअतों से पहुँचे थे।

Eppelheim, Leipzig ,कौर गीराउ, बरसाल, Radolfzell, Ruedesheim, Herborn ,Goeppingen, Giessen, Riedstadt, Herford Hattersheim, Soltau, Gemuenden, हाईडल बर्ग, मन हाईम, Koeln, Montabauer, लिम्बर्ग, वाज़बादन, Nauheim, Eich, Bielefeld, Mosbach, Heilbronn

जर्मनी के विभिन्न जमाअतों से आने वाले परिवारों के अतिरिक्त विदेश कनाडा और पाकिस्तान से आने वाले दोस्तों ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ातों इस कार्यक्रम आठ बजे तक जारी रहा।

आमीन की तकरीब (समारोह)

बाद में 8: 15 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद हॉल में पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार समारोह आमीन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 26 बच्चों और बच्चियों से कुरआन एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय शिराज़ इमरान, वलीद अहमद सईद, आरफैन इस्लाम, अबीर अहमद, अब्दुल रहमान, चौधरी यासीन नवाज़, राणा साक़िब महमूद, रमीज़ अहमद, वासिफ़ सलाम, सालिक अतीक, फातेह अहमद बट, अदील अहमद।

प्रिया सबीहा खालिद, रामीन अहमद, मुस्कान अहमद बासमह आदिल, लबीना शाहिद, हदीकह अहमद, नैशा अहमद, अतिया भट्टी, पारसा देवल, जाज़बह महमूद, आयशा नवाज़, मुहर निसा अहमद ानीनग अहमद ानिया नूर काहलों

समारोह आमीन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

उसका नामो निशान भी शेष न रहने दिया। इसलिए अब ज़िक्ररुल्लाह क्या है कि दिल से आवाज़ निकालकर सिर तक ले जाई जा और ज़ोर से चीखा जाए कि सारे मोहल्ले में आराम हराम कर दिया जाए और आसपास के सभी लोगों की इबादत ख़राब कर दी जाए। इस को वह दिल पर चोट लगाना कहते हैं। मानो उनके पास दिल एक ऐसी चीज़ है जिस में ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़ोर से घुसेड़ा जाता है इसी तरह कुछ ने यह तरीका निकाल रखा है कि शेर सुनते और कव्वालियाँ कराते और कनचनियाँ नचाते हैं और कहते हैं कि यह ज़िक्रे इलाही की मज्लिस गर्म हो रही है। फिर दिल बहलाते हैं कि इसमें अल्लाह अल्लाह की आवाज़ आए। अत: अजीब अजीब बातें आविष्कार ली गई। कहीं दिल बहल जाते हैं कहीं दिल पर चोट लगाई जाती है कहीं रूह से आवाज़ निकालने की कोशिश की जाती है और यह सब नाम उन्होंने अपने ही रख लिए हैं। कभी कहते हैं कि हम दिल से ज़िक्र बुलंद करते हैं और वह अर्श पर सिज्दा करके वापस आता है। कभी कहते हैं कि हम शरीर के हर अंग से अल्लाह अल्लाह की आवाज़ निकालते हैं। यह और इसी प्रकार और बहुत सी बिदअतों को उन्होंने आविष्कार कर लिया है। कुछ ऐसे भी हैं जो कुरआन करीम की कोई आयत पढ़ते और नाचते हैं और कुछ यूं भी हैं कि एक आदमी कुछ शेयर पढ़ता है और दूसरे नाचते हैं और कहते हैं कि वज्द आ गया और बेहोशी छा गई। फिर जलसा में बैठे-बैठे एकाएक बहुत ज़ोर से अल्लाह अल्लाह कह कर कूद पड़ते हैं। तो इस तरह के अजीब अजीब ज़िक्र निकाले गए हैं। हालांकि इन्हें इस्लाम धर्म से कोई संबंध नहीं है लेकिन इससे यह नहीं कहा जा सकता कि ज़िक्रे इलाही कोई बुरी बात है हाँ यह कहना चाहिए कि यह बिदअतें जो इन लोगों ने पैदा कर ली हैं यह बुरी हैं। लेकिन इन लोगों को कुछ परवाह नहीं है हालांकि रसूले करीम, सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते

كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَ كُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ

(निसाई किताब सलातुल ईदैन) प्रत्येक नई बात जो धर्म में उत्पन्न हो वह गुमराही है और प्रत्येक गुमराही जहन्नुम में ले जाती यही कारण है कि उन लोगों के बनाए हुए ज़िक्र ख़ुदा तआला के करीब ले जाने वाले नहीं बल्कि बहुत दूर कर देने वाले हैं। अत: जब इस प्रकार के ज़िक्र निकले हैं तभी से मुसलमान अल्लाह तआला से दूर होते जा रहे हीं। अत: ये सब बातें बिदअत हैं और जब अल्लाह तआला और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई बातों के ख़िलाफ किया जाएगा तो ज़रूर है कि क से रूहानियत कमज़ोर हो इसलिए मुसलमानों से रूहानियत मिट रही है। दूसरे ये कि इन बिदअतों में एक विशेष बात है जिसकी वजह से ज़ाहिर में आन्नद और मज़ा अनुभव होता है परन्तु चूँकि वे सारा आन्नद और मज़ा बनावटी होता है इसलिए असली आन्नद से अनजान होकर बनावटी के पीछे लग जाता है तो हलाक हो जाता है। इसका उदाहरण ऐसा ही है कि एक व्यक्ति के पेट में दर्द हो। लेकिन वे बजाय कि उसका इलाज कर अफीम खाकर सो रहे। इसका अस्थायी परिणाम तो यह होगा कि बेहोश हो जाने के कारण उसे आराम महसूस होगा लेकिन दरअसल वह मर रहा होगा तथा समय आएगा जबकि वही दर्द हत्या इस को कत्ल कर देगी।

वास्तविक बात यह है कि आजकल जिस का नाम लोगों ने ज़िक्र रखा हुआ है वह ज्ञान है जिसे " इलमे तुरब" कहते हैं और अंग्रेजी में मसमेरीज़म। एक दूसरा इलम भी है जिसे हेपनाटिज़म है जो फ्रांस के एक डॉक्टर ने ईजाद किया है। इसका अध्यात्म से कोई संबंध नहीं होता बल्कि विचार के सम्बन्ध रखता है और ख़ुदा तआला ने विचार में एक ऐसी शक्ति रखी है कि जब विशेष रूप से इसे एक ओर आकर्षित किया जाता है तो इसमें एक विशेष प्रभाव पैदा हो जाता है। और इसके द्वारा दिल में ख़ुशी और आन्नद भी पैदा किया जा सकता लेकिन वह आन्नद ऐसा ही होता है जैसे कि अफीम, कोकीन, या भांग पीकर प्राप्त होता है हालांकि दरअसल वह आन्नद नहीं होता बल्कि स्वास्थ्य ख़राब कर देने वाली बेहोशी होती है इसी तरह जब विचारों को जमा कर के अंगों पर प्रभाव डाला जाता है तो एक प्रकार की उनींदापन तारी हो जाती है जिस से सुख महसूस होता है। और ये लोग समझते हैं कि अल्लाह अल्लाह कहने कि लज़्ज़त है हालांकि इस समय अगर वह राम राम भी कहें तो वैसी ही ख़ुशी महसूस हो। लिखा है कि एक बुज़ुर्ग नाव में बैठे कहीं जा रहे थे उन्होंने ज़िक्र करना शुरू और ऐसे ज़ोर से किया कि दूसरे लोग जो हिन्दू थे वे भी अल्लाह तआला तआला करने लग गए। लेकिन वहीं एक हिंदू साधु बैठा था। उसकी ज़बान पर अल्लाह अल्लाह जारी न हुआ। इस पर वह अपना विशेष ध्यान डालने लगे। मगर डाल ही रहे थे कि उनके मुंह से अपने अपने आप राम राम निकलना शुरू हो गया। क्योंकि उस साधु ने उन पर राम राम जारी करने का ध्यान करना शुरू कर दिया। यह देखकर वह बड़े हैरान हुए और उसी दिन से इस तरह ज़िक्र करने से तौबा की क्योंकि उन्हें मालूम हो गया कि यह एक ज्ञान है न कि ज़िक्र का प्रभाव। क्योंकि यदि अल्लाह कहने का ही यह प्रभाव होता है कि दूसरों की ज़बान से भा अपने आप जारी जाता तो राम राम क्यों जारी होता। तो उन लोगों की हालत ऐसी ही होती है कि कोई व्यक्ति युद्ध में जा रहा हो और सख्त भूखा है कि उसे एक थैली मिली जिसे दाने समझ कर खुश हो रहा हो लेकिन वास्तव में इसमें ठीकरियां पड़ी हों। यही स्थिति इस आदमी है कि है जो इस प्रकार के तरीकों पर चलता है समझता है कि अल्लाह तआला की नज़दीकी पा रहा हों। हालांकि वास्तव में एक नशा होता जिस में वह मख़मूर हो जाता है यही कारण है कि बावजूद इसके कि वह समझता है कि विशेष स्थान पर पहुँच गया हों लेकिन उसका दिल वैसे का वैसा ही गंदा और अशुद्ध होता है जैसा कि पहले था। तो यह अफीम आदि की तरह एक नशा होता है हमारी जमाअत के एक ईमानदार व्यक्ति हमेशा मुझे कहा करते थे कि इस तरह करने से बड़ा मज़ा आता है मैं इन को भी कहता कि जिस तरह अफीम और कोकीन से मज़ा आता इसी तरह इससे भी आता है। इस का सबूत यह है कि ऐसे ज़िक्रों से रूहानी सफाई नहीं होती बल्कि वे जो कहते हैं कि हमारा ज़िक्र अर्श तक पहुँचता है उनमें भी रूहानी सफाई नहीं होती। इस पर उन्होंने सुनाया कि यह बात बिल्कुल सही है। एक व्यक्ति था जो कहता था कि मैंने सभी स्तर तय कर लिए हैं लेकिन बावजूद इसके लोगों से अनाज और दाने मांगता फिरता था। मैं इस के बारे में विचार करता था कि जब इस स्थान पर पहुंचा हुआ। है तो क्यों लोगों के सामने मांगने के लिए हाथ फैलाता है।

लालची पीर का किस्सा:

हज़रत मसीह मौऊद एक व्यक्ति के बारे में फरमाते हैं कि वह अपने आप को विशेष स्थिति तक पहुंचा हुआ समझता था। लेकिन एक बार एक " मुरीद " के यहाँ गया और जाकर कहा। लाओ मेरा टैक्स (यानी भेंट)। अकाल का मौसम था। मुरीद ने कहा कुछ नहीं। माफ कीजिए । पीर साहिब बहुत देर तक लड़ते झगड़ते रहे और आख़िर कोई चीज़ पकवाई और रूपया लेकर जान छोड़ा। तो इस प्रकार की कमज़ोरियां और गन्द उन लोगों में देखा जाता है जो बड़े बड़े दावे करते हैं।

बात यह है कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य की आवाज़ और विचार में भी एक प्रकार का प्रभाव रखा है। जैसे यदि इंसान हर समय किसी बात के बारे में सोचता है कि ऐसा हो गया तो उसके विचार में इसी प्रकार नक्शा खिंच जाता है। इसी तरह जब कोई व्यक्ति यह विचार लेता है कि मेरे दिल से अल्लाह अल्लाह निकल रहा है तो बैठे भैठे वह इस प्रकार की आवाज़ सुनना शुरू कर देता है कि मानो उसका दिल ही बोल रहा है, हालांकि अगर वास्तव में उसका दिल ही बोलता है तो फिर क्या कारण है कि पवित्र नहीं हो जाता। फिर हिंदुओं में मुसलमानों की तुलना में भी अधिक लोग ऐसे होते हैं जो न केवल अपना ही दिल बुलाते हैं बल्कि दूसरों के दिलों को भी बुला लेते हैं।

मेरा इरादा है कि इस के संबंध में एक पुस्तक लिखूं और बताओं कि नबियों और कलाकारों में क्या अंतर होता है। यह एक मामूली ज्ञान है लेकिन इसका नतीजा यह होता है कि इंसान अपने सुधार से लापरवाह हो जाता है क्योंकि वह समझने लग जाता है कि में ख़ुदा तआला तक पहुँच गया हूँ हालांकि वह नहीं पहुंचा होता। यदि कोई व्यक्ति किसी स्थान पर पहुँचना चाहे और किसी और ही जगह पहुंचकर समझ ले कि जहाँ मुझे जाना था वहाँ पहुँच गया हूँ तो वहीं बैठ जाएगा। जिस का नतीजा यह होगा कि भारी नुकसान उठाया। इसी तरह इस प्रकार के कर्म करने वाले भी ग़लती से यह समझ लेते हैं कि हम मूल स्थान पर पहुँच गए हैं हालांकि इससे कोसों दूर होते हैं और एक अफीम की तरह नशे में पड़े होते हैं।

अत: इस प्रकार के ज़िक्र और अज़कार लग़्व थे जिनसे हज़रत मसीह मौऊद ने रोका। और उनके करने वालों की निंदा की है। क्योंकि जब हिंदू ईसाई भी यही बात कर सकते हैं तो यह ज़िक्रुल्लाह कैसे कहला सकते हैं।

बाकी रहा ज़ोर से उल्लेख या राग आदि सुनने। अत: मैंने बताया है कि व्यक्ति के अंगों में एक विशेष शक्ति रखी गई है। प्रभाव स्वीकार करने और प्रभाव पहुंचाने और अंगों पर प्रभाव जिन दरवाजों से होता है उन में से एक कान भी है जो अच्छी आवाज़ से प्रभावित होते हैं । इंसान तो इंसान जानवर भी अच्छी आवाज़ से प्रभावित

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 13 July 2017 Issue No. 28

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

होते हैं। जैसे सांप के सामने बीन बजाई जाए तो वह लौटने लगता है लेकिन क्या यह समझा जा सकता है कि रूहानियत का कोई विशेष प्रभाव हुआ है। कदापि नहीं। इसी तरह अगर गाना सुनने से कोई नाचने लगता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी रूहानयित पर असर हुआ। बल्कि यह कि उसकी भावनाओं ने एक ऐसा प्रभाव स्वीकार किया है जिस का अध्यात्म से कोई संबंध नहीं है। अत: अगर कोई व्यक्ति गाने आदि को आध्यात्मिकता पर असर डालने वाला समझता है तो यह उसकी ग़लती है और नादानी है। क्योंकि जिस तरह एक सांप बीन पर मस्त होता है उसी तरह गाने और बजाने पर आजकल सूफी नाचते हैं। फिर यह एक बिदअत है कि ऊंची और बुलन्द आवाज़ से कोई ज़िक्र किया जाए। एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जा रहे थे कि चलते चलते सहाबा ने ज़ोर से कहा।

अल्लाहो अकबर अल्लाहो अकबर इस पर आप ने फरमाया

اِرْبَعُو عَلٰی اَنْفُسِکُمْ فَاِنَّکُمْ لَا تَدْعُوْنَ اَصَمَّ وَلَا غَائِبًا اِنَّہٗ مَعَکُمْ اِنَّہٗ سَمِیْعٌ قَرِیْبٌ

(बुखारी किताबुल जिहाद) अबू मूसा कहते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फरमाया तुम लोग अपने नफ़सों पर रहम करो। धीरे धीरे क्यों नहीं कहते जिसे तुम पुकारते हो वह न बहरा है और न ग़ायब बल्कि वह ख़ूब सुनता और तुम्हारे करीब और तुम्हारे साथ है।

लेकिन आजकल के सूफ़ियों को देखो जहां उनकी ज़िक्र की मज्लिस हो वह मोहल्ला गूंज उठता है। और उसे वह बड़ा नेकी का काम समझते हैं हालांकि शरीयत के ख़िलाफ हो रहा है फिर शेर ज़िक्र पर नृत्य और आन्नद, चीख़ मारना, ज़ोर से ज़िक्र करना, सिर हिलाना, आदि कोई बात भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित नहीं। कहा जाता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शेर सुनते थे लेकिन यह कहीं साबित नहीं हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शेर ज़िक्र के रूप में सुना करते थे। आप का शेर सुनना ऐसे होता था कि हस्सान आए और आकर अर्ज़ किया हे रसूलल्लाह अमुक काफ़िर ने आप के खिलाफ शेर कहे हैं और मैंने उनका जवाब लिखा है। यह आप सुन लेते या कि एक व्यक्ति के कत्ल का आपने आदेश दिया था उसने अनुमति लेकर ऐसे शेर पढ़े जिनमें अपनी जान बख्शी की इस तरह आवेदन कर दी कि जब आपके पास आने लगा तो लोगों ने मुझे कहा कि पैगंबर ने तेरे कत्ल का आदेश दिया है। और वह तुझे कत्ल करवा देंगे। लेकिन मैंने उस पर भरोसा नहीं किया और समझा कि जब उनके पास जा रहा हूं और जाकर माफी मांग लूंगा तो क्या फिर भी हत्या किया आऊंगा। यह सुनकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर अपनी चादर डाल दी कि कोई उसे कत्ल करन सके। उस के बाद उसने कहा कि मुझे अपनी जान का डर नहीं था कि मैंने इस तरह माफी मांगी है, लेकिन यह डर था कि मैं इस कुफ्र की स्थिति में ही कत्ल नकर दिया जाओं क्योंकि मैंने समझ लिया है कि इस्लाम सच्चा धर्म है। तो रसूले करीम इस प्रकार शेर सुनते थे। लेकिन इससे यह कहां साबित हो गया कि आप के सामने कव्वालियाँ पढ़ी जाती थीं या नाचा जाता था या इलाही मुहब्बत के शेर पढ़े जाते और उस पर सहाबा नृत्य करते थे और उन पर बेहोशी छा जाती थी। अत: आजकल जो कुछ किया जाता है यह सब बिदअत है जो आमतौर पर फैल गई है। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस तरह शेर सुनते थे कि काफिरों से युद्ध रहा है एक सहाबी जोश दिलाने के लिए कहता है कि आज या तो हम जीत पाएंगे या जान दे देंगे मगर पीछे नहीं हटेंगे। अत: यह दलील कि चूँकि रसूले करीम शेर सुनते थे इसलिए हम भी सुनते हैं बिल्कुल ग़लत और बेहूदा है। फिर शेर सुनकर जितनी हरकतें की जाती हैं वे सब की सब शरीयत के ख़िलाफ हैं इस्लाम में इन का कोई पता नहीं चलता।

(शेष.....)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

जमाअत की सेवा के इच्छुक ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के कुछ निकायों में कार्यकर्ता दर चतुर्थ आसामी भरी जा है। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में चतुर्थ श्रेणी सेवा के इच्छा हों वे निम्नलिखित शर्तों के अनुसार आवेदन कर सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है। (2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट प्रस्तुत करना आवश्यक होगा। (3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो इन्ट्रविय़ू बोर्ड तकरुर कारकुनान में सफल होंगे। (4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल कादियान मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे। (5) उम्मीदवार के कादियान आवाजाही का सफर खर्च अपने होंगे। (6) अगर किसी उम्मीदवार का चयन होता है तो इस अवस्था में उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। (प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकता है। इस घोषणा के 2 महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उन पर विचार होगा) (नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760
e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

समय तुम प्रकट कर रहे हो। अत: वह ख़ुदा जिसने ईसा के लिए एलिया नबी को आकाश से न उतारा और यहूदियों के समक्ष उसको उपमाओं से काम लेना पड़ा, वह तुम्हारे लिए क्योंकर ईसा को उतारेगा। जिसको तुम दोबारा उतारते हो, उसी के फ़ैसले को तुम अस्वीकार करते हो। यदि सन्देह है तो कई लाख ईसाई इस देश में मौजूद हैं और उनकी इन्जील भी। उन से पूछ लो कि क्या यह सत्य नहीं है कि हज़रत ईसा ने यही कहा था कि एलिया जो दोबारा आने वाला था वह युहन्ना ही है अर्थात यहया और इतनी बात कहकर यहूदियों की पुरानी आशाओं पर पानी फेर दिया। यदि अब यह आवश्यक है कि ईसा नबी ही आकाश से आएँ तो इस स्थिति में हज़रत ईसा सच्चा नबी नहीं ठहर सकता क्योंकि यदि आकाश से वापस आना अल्लाह के विधान में है तो इल्यास नबी क्यों वापस न आया और उसके स्थान पर यहया को इल्यास ठहरा कर उपमा से काम लिया गया। बुद्धिमान के लिए यह सोचने का स्थान है ।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 72 -73)

☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad